mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-127 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

10 मई 2025 शनिवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

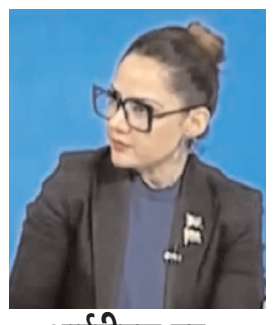

आईपीएल पर...
@ पेज 7

पठानकोट की सीमा से लगे हिमाचल के इलाकों में 'हाई अलर्ट'

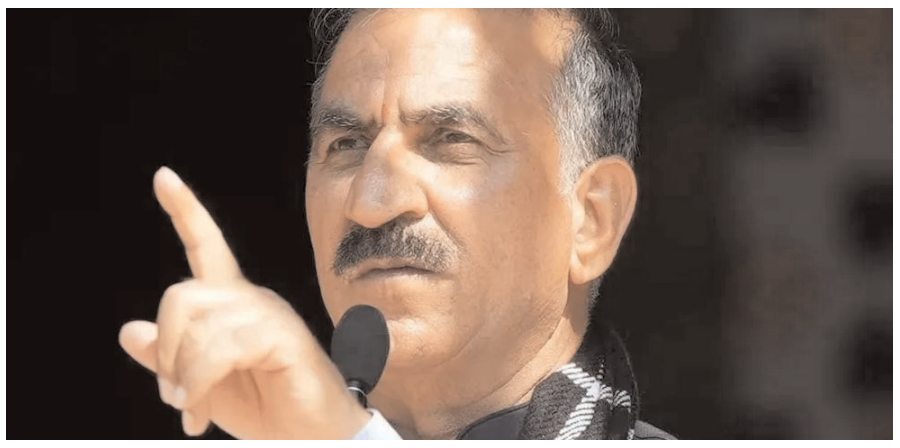

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि पंजाब के पठानकोट की सीमा से लगे राज्य के इलाकों में 'हाई अलर्ट' जारी किया गया है। साथ ही पुलिस को हिमाचल

● मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने दिये निर्देश

के नूरपुर और इंदौरा के सीमावर्ती इलाकों में हवाई हमले की चेतावनी वाले सायरन बजने पर %ब्लैकआउट% के लिए विशेष निर्देश जारी करने को कहा गया है। सुक्खू ने यहां अधिकारियों और जिला प्रमुखों के साथ बैठक की।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा, ''घबराने की कोई बात नहीं है लेकिन हमें अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। हमें अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी और सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने आम नागरिकों से अपील की है कि केवल आधिकारिक सूचना पर ही विश्वास करें। यहां पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि लोगों की सहायता करने और जरूरत पड़ने पर तुरंत कार्रवाई करने के लिए मुख्य सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग के कार्यालय समेत नियंत्रण कक्ष खुले रहेंगे। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि जम्मू कश्मीर में वर्तमान में अध्ययन कर रहे लगभग 103 छात्र-छात्राओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

उन्होंने मुख्य सचिव से छात्रों को सुरक्षित घर वापस लाने के लिए त्वरित कार्रवाई करने को कहा। अधिकारियों ने बताया कि राज्य भर में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और जम्मू कश्मीर तथा पंजाब की सीमा से लगे जिलों में कड़ी निगरानी रखी जा रही है। नूरपुर के पुलिस अधीक्षक (एसपी) अशोक रतन ने लोगों से सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने से बचने और ऐसा कोई बयान पोस्ट न करने का आग्रह किया है जिससे शांति और सद्भाव भंग हो।

इस बीच अधिकारियों ने बताया कि पंजाब और जम्मू कश्मीर के लिए कई बस मार्ग बंद कर दिए गए हैं। हिमाचल सड़क परिवहन निगम (एचआरटीसी) ने कटरा, पठानकोट, अमृतसर और जालंधर की ओर जाने वाली बसों को अगले आदेश तक रोक दिया है। रक्षा मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारतीय सशस्त्र बलों ने देश के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों के 15 शहरों में सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की पाकिस्तान की कोशिशों को विफल कर दिया। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारतीय सशस्त्र बलों ने बुधवार को 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकवादियों के नौ ठिकानों पर मिसाइल हमले किए।

संक्षिप्त समाचार

शहबाज से नहीं संभल रहा पाकिस्तान!

इस्लामाबाद (एजेंसी)। भारत ने पहलगाम आतंकी हमले का करारा जवाब देते हुए पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया है। भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच अब पूर्व पीएम नवाज शरीफ भी लंदन से अपने स्वदेश लौट आए हैं। इस्लामाबाद में वह अपने नेताओं के साथ बैठकें ले रहे हैं। सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के प्रमुख नवाज शरीफ ने गुरुवार देर शाम प्रधानमंत्री आवास में एक सुरक्षा बैठक में भाग लिया। नवाज शरीफ ने अपने छोटे भाई और मौजूदा प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को भारत के साथ कूटनीतिक रूप से तनाव कम करने की सलाह दी। 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में बुधवार तड़के भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव

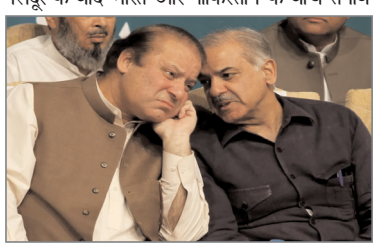

काफी बढ़ गया है। इसके बाद पाकिस्तान ने 15 भारतीय शहरों पर हमला करने का असफल प्रयास किया। भारत के ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान में हड़कंप है। पाकिस्तान के न्यूजपेपर द एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने कहा कि पूर्व पीएम नवाज शरीफ चाहते हैं कि सरकार दोनों परमाणु-सशस्त्र राज्यों के बीच शांति बहाल करने के लिए सभी उपलब्ध राजनयिक संसाधनों का उपयोग करें। नवाज शरीफ के हवाले से कहा गया कि मैं (भारत के खिलाफ) आक्रामक रुख अपनाने के पक्ष में नहीं हूं। एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने कहा कि नवाज शरीफ दोनों देशों के बीच तनाव कम करने के लिए लंदन से पाकिस्तान लौटे हैं। वह पर्दे के पीछे से काम कर रहे थे। बढ़ते तनाव के बीच नवाज शरीफ को गुरुवार को औपचारिक रूप से सामने आना पड़ा है। नवाज शरीफ ने भारत-पाक तनाव का आकलन करने के लिए पीएम हाउस में बुलाई गई उच्च स्तरीय नागरिक-सैन्य बैठक में भाग लिया। अखबार ने कहा कि चूंकि उनके पास कोई सरकारी विभाग नहीं है, इसलिए उन्होंने सत्तारूढ़ पार्टी सरकार के प्रमुख की हैसियत से बैठक में भाग लिया।

आतंकवाद को लेकर पाकिस्तान पर बरसे विनय क्वात्रा

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अमेरिका में भारतीय राजदूत विनय क्वात्रा ने कहा है कि भारत आतंकवादियों के साथ युद्ध की स्थिति में है और इन 'नीचों, राक्षसों' को जवाबदेह ठहराकर पहलगाम हमले के पीड़ितों को न्याय दिलाएगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कोई भी देश किसी भी हालत में इन आतंकवादियों को खुली छूट नहीं दे सकता। क्वात्रा ने सीएनएन को दिए साक्षात्कार में कहा, ''22 अप्रैल की घटना सर्वाधिक जघन्य आतंकवादी घटना थी। यह कोई नहीं कह सकता कि इन आतंकवादियों को ऐसे ही जाने देना चाहिए, और हमने परसों यही किया, उन्हें जवाबदेह ठहराया, उन्हें न्याय के कठघरे में खड़ा किया।'' यह

साक्षात्कार ऐसे समय में हुआ है जब भारत ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ अपनी कूटनीतिक आक्रामकता बढ़ा दी है। उन्होंने कहा, ''हम आतंकवादियों के साथ युद्ध की स्थिति में हैं और जैसा कि मैंने कहा, हम पीड़ितों को न्याय दिलाएंगे और उन्हें (आर्तकियों को) जवाबदेह ठहराएंगे।'' क्वात्रा ने कहा, ''इसमें हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य इन नीच, अमानवीय राक्षसों को जवाबदेह ठहराना और पीड़ितों को न्याय दिलाना है।'' भारत ने छह और सात मई की रात को 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया, जिसमें पहलगाम आतंकी हमले के प्रतिशोध में पाकिस्तान और इसके कब्जे वाले कश्मीर में 9 स्थानों पर आतंकी ठिकानों पर हमले किए गए। पहलगाम में 26 नागरिकों की हत्या किए जाने की बात कहते हुए क्वात्रा ने कहा, ''किसी भी दुनिया में आप ऐसे आतंकवादियों को ऐसे नहीं जाने देंगे। और यही हमने किया।''

एम्स दिल्ली ने कैंसिल की सभी डाक्टरों और नर्सों की छुट्टियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को लेकर दिल्ली एम्स ने आज संस्थान में सभी की डाक्टर्स, नर्सेज,अधिकारियों और

कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं। संस्थान ने नोटिस जारी कर इसकी जानकारी सभी को दी है। नोटिस में कहा गया कि एम्स दिल्ली में सभी कर्मियों की छुट्टियां रद्द की जा रही हैं। इससे पहले सफदरजंग अस्पताल ने भी अपने यहां कर्मचारियों और नर्स व डॉक्टरों की छुट्टियां रद्द कर दी है। नोटिस में कहा गया, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आदेश के अनुसार, आज 9 मई से अगले आदेश तक किसी भी अधिकारी को मेडिकल आधार को छोड़कर स्टेशन अवकाश सहित किसी भी प्रकार की छुट्टी नहीं दी जाएगी। इसके अलावा, पहले से स्वीकृत छुट्टी, यदि कोई हो, रद्द कर दी गई है और छुट्टी पर गए अधिकारियों को तुरंत अपनी ड्यूटी पर लौटने का निर्देश दिया गया है।

रेल मंत्री ने बैठक में दिए निर्देश

एयरपोर्ट में फंसे यात्रियों के लिए स्पेशल ट्रेन, जरूरत के हिसाब से चलाएं गाड़ियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के चलते देश के 24 एयरपोर्ट 15 मई की सुबह तक बंद कर दिए गए हैं। ऐसे में रेल मंत्री ने अधिकारियों के साथ बैठक की और लोगों की जरूरत के हिसाब से स्पेशल ट्रेन चलाने के निर्देश दिए हैं। वहीं, जम्मू और चंडीगढ़ एयरपोर्ट के बंद होने के चलते जो पैसेंजर फंसे थे, उनके लिए भारतीय रेल द्वारा विशेष गाड़ियों की व्यवस्था की गई है।

रेल परिचालन के लिए की गई व्यवस्थाओं की समीक्षा रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने की। स्थिति का पूर्ण जायजा लेने के बाद उन्होंने रेलवे अधिकारियों को निर्देश दिया कि विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए सीमावर्ती क्षेत्रों में लोगों की सहायता के लिए गाड़ियों का परिचालन किया जाए। नियमित गाड़ियों के साथ-साथ आवश्यकतानुसार विशेष गाड़ियों का भी परिचालन किया जाए।

रेल मंत्री के निर्देश पर दिनांक 9 मई, 2025 को जम्मू तथा उधमपुर से चार विशेष गाड़ियों का परिचालन किया गया।

रेलवे ने पहली विशेष गाड़ी 04612 का परिचालन जम्मू स्टेशन से सुबह 10:45 बजे किया जिसमें 12 कोच अनारक्षित श्रेणी के और 12 रिजर्व क्लास के लगाए गए। 20 कोच वाली वंदे भारत एक्सप्रेस दिन में 12:45 बजे उधमपुर से रवाना हुई और जम्मू तथा पठानकोट के रास्ते नई दिल्ली आई। 22 एलएचबी कोच वाली विशेष गाड़ी का परिचालन संध्या 7:00 बजे जम्मू स्टेशन से किया गया। एक और वंदे भारत विशेष गाड़ी का परिचालन किया गया जो दिन में 3:30 पीएम बजे जम्मू से खुली और संध्या में नई दिल्ली स्टेशन पहुंचेगी।

कार में दूसरी महिला के साथ बैठा था पति, पत्नी ने रोका तो चढ़ा दी गाड़ी

सीहोर (एजेंसी)। एमपी के सीहोर जिले में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक महिला ने अपने पति को दूसरी महिला के साथ कार में घूमते हुए पकड़ लिया। इसके बाद महिला ने कार

को रोकने की कोशिश की। इसके लिए महिला कार के सामने तक आ गई, लेकिन इसके बावजूद उसका पति नहीं रुका। इसका वीडियो भी सामने आया है, जिसमें पति, अपनी पत्नी को कार से धक्का मारते हुए आगे बढ़ जाता है। वहीं पुलिस इस मामले को लेकर जांच करने की बात कह रही है। पुलिस का कहना है कि मामले को गंभीरता से लिया गया है, जल्द ही उचित कार्रवाई की जाएगी। दरअसल, पूरा मामला सीहोर शहर के कोतवाली थाना क्षेत्र के बस स्टैंड का है। यहां एक शख्स अपनी कार में बैठकर किसी महिला के साथ घूम रहा था। इसी बीच अचानक उसकी पत्नी की निगाह उस पर पड़ गई। पत्नी ने अपने पति को कार में दूसरी महिला के साथ देखा तो उसका पारा हाई हो गया। इसके बाद महिला ने कार को रुकवाने का प्रयास किया। वहीं पत्नी को देखकर पति दंग रह गया और उसे कार में बैठी महिला के कहने पर कार को आगे बढ़ा दिया।

कायर पाकिस्तान! अब सिविलियंस को बना रहा ढाल

भारतीय सेना ने दिखाई तस्वीर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के जवाबी हमलों के बाद से पाकिस्तान बौखला गया है। पाकिस्तान अब अपने सिविलियंस को ढाल बना रहा है। उसे अपने नागरिकों की जरा सी भी फिक्र नहीं है। भारतीय सेना की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने कहा कि पाकिस्तान ने नागरिक विमानों को ढाल बनाकर भारत पर ड्रोन अटैक किए। इस दौरान पाकिस्तान ने अपने एयरस्पेस को एक्टिव रखा। दमम से लाहौर के बीच फ्लाइट जारी रखी गई। भारत के जवाबी हमले के दौरान पाकिस्तान के आम नागरिकों की जाने जा सकती थीं।

सेना की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने तस्वीर दिखाते हुए कहा, %पाकिस्तान ने 7 और 8 मई को शाम 08:30 बजे एक असफल ड्रोन और मिसाइल हमला करने के बावजूद अपना नागरिक हवाई क्षेत्र बंद नहीं किया। पाकिस्तान नागरिक विमान को ढाल के रूप में इस्तेमाल कर रहा है, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि भारत पर उसके हमले से भारत की वायु रक्षा प्रतिक्रिया तेज हो जाएगी। भारतीय वायु सेना ने अपनी प्रतिक्रिया में काफी संयम दिखाया, जिससे

अंतरराष्ट्रीय नागरिक वाहकों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई।%विंग कमांडर ने कहा, %हमने जो स्क्रीनशॉट दिखाया है, उसमें पंजाब सेक्टर में उच्च वायु रक्षा चेतावनी की स्थिति के दौरान एल्गीकेशन फ्लाइट रडार 24 का डेटा दिखाया गया है। जैसा कि आपने देखा है, हमारे घोषित बंद के बाद भारत का हवाई क्षेत्र नागरिक हवाई यातायात पूरी तरह बंद है। हालांकि, कराची और लाहौर के बीच हवाई मार्ग पर नागरिक विमान उड़ानें फिर भी जारी रही थीं।

15 मई तक बंद रहेंगे देश के 24 एयरपोर्ट

पाकिस्तान के साथ तनाव के बीच केंद्र सरकार का फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के साथ तनाव के बीच केंद्र सरकार ने देश के 24 एयरपोर्ट को 15 मई तक बंद रखने का फैसला किया है। पहले इसके लिए 10 मई तक की तारीख तय की गई थी। गुरुवार को नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने घोषणा की थी कि 24 एयरपोर्ट 10 मई तक आम नागरिकों के लिए बंद रहेंगे। अब इसकी तारीख 15 मई तक बढ़ा दी गई है।

कई एयरलाइनों ने यात्रियों के लिए एडवाइजरी जारी कर एयरपोर्ट बंद होने और सुरक्षा प्रोटोकॉल की जानकारी लेने के लिए कहा है। इससे पहले सभी एयरलाइन ने बताया था कि केंद्र के निर्देश के अनुसार यात्रियों को फ्लाइट के रवाना होने से तीन घंटे पहले एयरपोर्ट पहुंचना होगा। फ्लाइट के उड़ान भरने से 75 मिनट पहले चेक इन बंद कर दी जाएगी।

एयर इंडिया ने एक्स पोस्ट में लिखा ÷भारत में कई एयरपोर्ट के लगातार बंद रहने के बारे में विमानन अधिकारियों की अधिसूचना के बाद, अगली जानकारी मिलने तक जम्मू, श्रीनगर, लेह, जोधपुर,

अमृतसर, चंडीगढ़, भुज, जामनगर और राजकोट जैसे स्टेशनों से आने-जाने वाली एयर इंडिया की फ्लाइट 15 मई को सुबह 5:29 बजे तक रद्द की जा रही हैं। इस अवधि के दौरान यात्रा के लिए वैध टिकट रखने वाले ग्राहक बिना अतिरिक्त शुल्क दिए दोबारा टिकट बुक करा सकते हैं या टिकट कैंसिल कर पूरा पैसा वापस ले सकते हैं।÷ इंडिगो ने श्रीनगर, जम्मू, अमृतसर, लेह, चंडीगढ़, धर्मशाला, बीकानेर, जोधपुर, किशनगढ़ और राजकोट आने-जाने वाली सभी फ्लाइटे 10 मई तक रद्द कर दी हैं। चंडीगढ़, श्रीनगर, अमृतसर, लुधियाना, भुंतर, किशनगढ़, पटियाला, शिमला, जैसलमेर, पठानकोट, जम्मू, बीकानेर, लेह, पोरबंदर और अन्य शहरों में हवाई अड्डे 14 मई तक बंद रहेंगे।

'उसका दर्दनाक अंत देखना चाहता हूं'

लश्कर के पूर्व आतंकी ने हाफिज सईद का काला सच किया उजागर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम हमले के बाद आतंकवाद के मामले पर पाकिस्तान दुनिया के सामने बेनकाब हो गया है। अब पाकिस्तान में पल रहे आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के एक पूर्व आतंकी ने इसके खौफनाक राज खोले हैं। लश्कर का यह पूर्व आतंकी नूर दाहरी अब खुलकर हाफिज सईद के काले राज उजागर कर रहा है। लश्कर-ए-तैयबा आतंकी संगठन के एक पूर्व सदस्य ने हजारों पाकिस्तानियों की मौत के लिए आतंकी समूह के प्रमुख हाफिज सईद को जिम्मेदार ठहराया है और उस पर राज्य के राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए युवाओं को मौत के रास्ते धकेलने का आरोप लगाया है। उसने बताया कि वह कभी डॉक्टर बनने की ख्वाहिश रखता था, लेकिन कैसे हाफिज सईद से प्रभावित होकर लश्कर में शामिल होने के उसके फैसले ने सुनहरे भविष्य को पटरी

से उतार दिया।

लश्कर के इस पूर्व सदस्य ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर एक लंबी पोस्ट में संगठन में अपनी भर्ती, वहां के अनुभवों और इससे हुए मोहभंग के बारे में पूरी कहानी साझा की है। ब्रिटेन स्थित थिंक टैंक इस्लामिक थियोलॉजी ऑफ काउंटर टेररिज्म के संस्थापक और एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नूर दाहरी ने कहा कि उनकी दिवंगत मां की इच्छा थी कि वह डॉक्टर बनें लेकिन इसके बावजूद वह प्रतिबंधित समूह के संस्थापक हाफिज सईद के प्रभाव में आकर यूनिवर्सिटी की पढ़ाई छोड़कर एलईटी में शामिल हो गए।

हाफिज सईद की सुरक्षा में था तैनात: उसने याद किया कि कैसे उसे मुरीदके में हाफिज सईद की सुरक्षा का काम सौंपा गया था, जहां आतंकी सरगना आराम से रहता था और मॉडिफाइड टोयोटा विगो में यात्रा करता था जिस सोने के लिए आरामदायक जगह थी। उसने बताया कि सईद के उग्र उपदेशों से प्रभावित होकर, अनगिनत युवाओं को लश्कर में भर्ती किया गया और उन्हें अफगानिस्तान व कश्मीर भेजा गया।

मंदिरों में भारतीय सेना की सुरक्षा के लिए किए जा रहे प्रार्थना और हवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के मध्य सैन्य संघर्ष के बीच दिल्ली के मंदिरों में सशस्त्र बलों के जवानों की सुरक्षा और देश की खुशहाली के लिए प्रार्थना एवं हवन किए जा रहे हैं। छतरपुर मंदिर के एक अधिकारी ने बताया कि इस मंदिर में हवन, पवित्र ग्रंथों का पाठ और आरती समेत विभिन्न प्रकार के प्रार्थना कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सुरक्षा, शक्ति और नकारात्मकता पर विजय के वास्ते देवी दुर्गा से आशीर्वाद लेने के लिए 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ किया जा रहा है और विशेष रूप से संकट के इस समय में भगवान हनुमान से शक्ति और भक्ति के आशीर्वाद के लिए 'हनुमान चालीसा' या 'सुंदरकांड' का जाप किया जा रहा है। अधिकारी ने कहा कि राष्ट्रीय संतुलन, सामूहिक कल्याण और सुरक्षा के लिए भगवान विष्णु की प्रार्थना के साथ 'विष्णु सहस्रनाम' का पाठ किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इन अनुष्ठानों के अतिरिक्त, भक्तों में एकता और शक्ति को बढ़ावा देने के लिए एक साझा आध्यात्मिक प्रयास के तहत हफ्ते में एक बार सामूहिक 'हवन' का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में सोलर पम्प स्थापना की योजना के लिए राज्य स्तरीय समन्वय समिति गठित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य शासन ने सिंचाई के लिए सोलर पम्प स्थापना की योजना प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना के क्रियान्वयन के लिये राज्य स्तरीय समन्वय समिति का गठन मुख्य सचिव की अध्यक्षता में किया है। समिति में सचिव उर्जा,वित्त,नगरीय विकास एवं आवास,किसान कल्याण तथा कृषि विकास,पंचायत एवं ग्रामीण विकास,राजस्व,विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सदस्य एवं नवीन तथा नवकरणीय उर्जा विभाग के सचिव सदस्य सचिव होंगे। राज्यस्तरीय समन्वय समिति द्वारा योजना के सभी घटकों अंतर्गत प्रगति की नियमित समीक्षा की जायेगी। योजना के क्रियान्वयन के लिए विभागों के बीच आवश्यक समन्वय योजना की प्रगति की नियमित (अधिकतम 3 माह) में समीक्षा की जायेगी, ताकि समय-सीमा में लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। योजना को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने के लिए आवश्यक विनिर्देश जारी करना, योजना क्रियान्वयन के संबंध में भारत सरकार के नवीन एवं नवकरणीय उर्जा मंत्रालय के साथ समन्वय करना और राज्य में योजना क्रियान्वयन में सुधार के उपाय के सुझाव भी समिति द्वारा दिए जायेंगे।

शासकीय सेवकों का मंहगाई भत्ता बढ़ाकर 55 प्रतिशत किया गया, आदेश जारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य शासन ने शासकीय सेवकों को बड़ी राहत देते हुए मंहगाई भत्ते की दर में वृद्धि का आदेश जारी किया है। आदेशानुसार, सातवें वेतनमान के तहत आने वाले कर्मचारियों को वर्तमान 50त्न महंगाई भत्ते के स्थान पर दो चरणों में बढ़ा हुआ भत्ता मिलेगा। एक जुलाई 2024 से मंहगाई भत्ता 3त्न बढ़कर 53 प्रतिशत किया गया है, जिसका भुगतान अगस्त 2024 के वेतन में होगा।इसी तरह 1 जनवरी 2025 से इसमें और 2त्न की वृद्धि कर इसे कुल 55 प्रतिशत कर दिया जाएगा, जिसका भुगतान फरवरी 2025 के वेतन के साथ किया जाएगा। राज्य शासन ने स्पष्ट किया है कि इस वृद्धि का वास्तविक लाभ 1 मई 2025 से दिया जाएगा और 1 जुलाई 2024 से 30 अप्रैल 2025 तक की एरियर राशि का भुगतान जून से अक्टूबर 2025 के बीच 5 किश्तों में किया जाएगा। 1 जुलाई 2024 से 31 मई 2025 के बीच सेवानिवृत्त हो चुके शासकीय कर्मचारियों को एरियर की पूरी राशि का एकमुश्त भुगतान किया जायेगा। इसी तरह एक जुलाई 2024 से 31 मई 2025 की अवधि में मृत कर्मचारियों के परिजनों को एरियर की पूरी राशि एकमुश्त प्रदान की जाएगी। 50 पैसे या उससे अधिक की राशि को अगले पूर्णांक रुपए में पूर्णांकित किया जाएगा। मंहगाई भत्ते का कोई भी भाग वेतन के रूप में नहीं माना जाएगा। इस भुगतान का व्यय संबंधित विभाग के चालू वित्तीय वर्ष के स्वीकृत बजट प्रावधान से अधिक नहीं होना चाहिए।

प्रदेश में 15 हजार ईको लब गठित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिये विद्यालयों में ईको क्लब का गठन लगातार किया जा रहा है। अब तक 15 हजार ईको क्लब का गठन किया जा चुका है। प्रदेश में वर्ष 2022-23 से यूथ एण्ड ईको क्लब के गठन के संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग ने दिशा-निर्देश जारी किये थे। विभाग द्वारा प्रतिवर्ष ईको क्लब की गतिविधियों के संबंध में कैलेण्डर जारी किया जाता है। शैक्षणिक सत्र-2024-25 में 5 से 12 जून, 2024 तक राज्य में पर्यावरण सप्ताह के अंतर्गत समर कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में एक पेड़ माँ के नाम'' अभियान, जल शक्ति अभियान, सम्पोषणीय जीवन-शैली संबंधित गतिविधियाँ, ईको हेकाथॉन के साथ निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की गयीं। निबंध प्रतियोगिता का शीर्षक जीवित गवाह, एक पेड़ की नजर से रखा गया था। स्कूलों में शैक्षणिक-सत्र 2025-26 के लिये पर्यावरण पर केन्द्रित कैलेण्डर तैयार किया जा रहा है। कैलेण्डर के अनुसार ईको क्लब में विद्यार्थियों की गतिविधियाँ सुनिश्चित की जायेंगी।

उच्च शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए, विश्वविद्यालयों के सुदृढ़ीकरण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध-उच्च शिक्षा मंत्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने गुरुवार को मंत्रालय स्थित सभाकक्ष में मंत्रि-परिषद के निर्णय के परिपालन में गठित विश्वविद्यालयों के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के संबंध में गठित समिति एवं विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकों की भर्ती, नियुक्ति, पेंशन आदि के लिए गठित समिति की बैठक लेकर विभिन्न बिंदुओं पर व्यापक चर्चा की। विश्वविद्यालयों के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के संबंध में गठित समिति ने विश्वविद्यालय की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ करने एवं अन्य बिंदुओं पर गहन विचार विमर्श कर, अनुशंसाओं के अंतिम प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण किया। श्री परमार ने कहा कि समिति द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन में निहित अनुशंसाओं पर, विभागीय परीक्षण उपरांत प्रभावी क्रियान्वयन का प्रयास किया जाएगा

बैठक में विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकों की भर्ती, नियुक्ति, पदोन्नति, पेंशन आदि के लिए गठित समिति ने, महाविद्यालयों की तरह विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकों की भर्ती, नियुक्ति, पदोन्नति, पेंशन आदि से जुड़े विविध विषयों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के मापदंडों के अनुसार एकरूपता रखी जाने को

लेकर व्यापक चिंतन-मंथन कर, अंतिम प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण किया गया। मंत्री श्री परमार ने प्रस्तुत अंतिम प्रतिवेदन के विभिन्न बिंदुओं पर व्यापक विमर्श कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाना, सम्पूर्ण देश का प्रण है। शिक्षा के माध्यम से ही देश को पुन: विश्वमंच पर सिरमौर बनाया जा सकता है। इसके लिए विश्वविद्यालयों को सशक्त एवं सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा को उत्तरोत्तर बेहतर बनाने के लिए, विश्वविद्यालयों के सुदृढ़ीकरण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। श्री परमार ने कहा कि विश्वविद्यालय, स्वायत्त आर्थिक सुदृढ़ीकरण के लिए आदर्श रेवेन्यू मॉडल तैयार करें। निधि का, लघु अवधि एवं दीर्घ अवधि के लिए निवेश करने की कार्ययोजना बनाने को लेकर भी चर्चा हुई। श्री परमार ने कहा कि सभी विश्वविद्यालय रिक्त पदों पर भर्ती एवं नियुक्ति प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करें। उन्होंने सभी विश्वविद्यालयों को रिक्त पदों में, नियमानुरूप एवं समस्त आवश्यक मापदंडों एवं मानकों का पालन करते हुए यथाशीघ्र भर्ती प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा श्री अनुपम राजन, विश्वविद्यालयों के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के संबंध में गठित समिति के अध्यक्ष प्रो. आर.पी. तिवारी, कुलपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकों की भर्ती, नियुक्ति, पेंशन आदि के लिए गठित समिति के अध्यक्ष और महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. भरत मिश्रा सहित 11 सदस्यीय उक्त दोनों समितियों के विभिन्न सदस्य कुलगुरुगण, उनके प्रतिनिधि एवं समन्वय अधिकारी उच्च शिक्षा श्री अनिल पाठक उपस्थित रहे।

दमोह जिले के पटेरा में 10 हजार से अधिक की आबादी को जल-आपूर्ति का लाभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दमोह जिले के पटेरा नगर में जल-प्रदाय परियोजना का सफल क्रियान्वयन किया गया है। यह परियोजना एशियन डेवलपमेंट बैंक के सहयोग से पूरी की गई है। पेयजल परियोजना का कार्य नगरीय विकास एवं आवास विभाग के अंतर्गत कार्य करने वाली मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कंपनी द्वारा किया गया है। परियोजना की लागत 9 करोड़ 42 लाख रुपये है। इस लागत के साथ निर्माण एजेंसी पर परियोजना के 10 वर्षों तक संचालन और संधारण की भी जिम्मेदारी रहेगी।

परियोजना के अंतर्गत पटेरा के 2535 घरों को नल कनेक्शन से जोड़ा गया है, जिससे अब प्रत्येक घर तक स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित हो गई है। जल की शुद्धि के लिए व्यारमा नदी से पानी लेकर, जल निगम द्वारा निर्मित अत्याधुनिक जल शोधन संयंत्र के माध्यम से इसका शोधन किया जा रहा है।

शहर की 10 हजार से अधिक की आबादी को लाभ पहुंचाने के लिये लगभग 45 किलोमीटर लंबी जल वितरण पाइप-लाइन बिछाई गई है। इसके अतिरिक्त जल संग्रहण के लिए 540 किलोलीटर क्षमता का ग्राउंड सर्विस

रिजर्वायर भी तैयार किया गया है।

इस परियोजना से पटेरा नगर के समस्त 15 वार्डों की जनता को लाभ मिल रहा है। घर-घर नल कनेक्शन मिलने से नागरिकों को अब पानी के लिए दूर जाने की दिक्कतों से छुटकारा मिल गया है।

मध्यप्रदेश में कृषि और उद्योग का समन्वय आत्मनिर्भरता की दिशा में दूरगामी पहल : प्रभारी मंत्री काश्यप

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एमएसएमई और भोपाल जिले के प्रभारी मंत्री श्री चैतन्य काश्यप ने कहा है कि मध्यप्रदेश में कृषि और उद्योग के समन्वय का अनूठा प्रयोग प्रदेश के आर्थिक परिदृश्य में नई क्रांति ला रहा है। कोर्टयार्ड बाय मैरियट में आयोजित मध्यप्रदेश में गन्ना फसल एवं शुगर कारखानों के सतत् विकास सम्मेलन में मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि खेती भारत की आत्मा है और एमएसएमई विभाग के माध्यम से शुगर फैक्ट्रियों की स्थापना से किसानों को बेहतर मार्केटिंग, तकनीकी सहायता एवं वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। इससे ग्रामीण आर्थिक विकास को नई गति मिल रही है। सम्मेलन में प्रदेश के एमएसएमई और कृषि विभाग के अधिकारी, उद्योगपति तथा किसान प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा 3 मई को मंदसौर में आयोजित बड़े कृषि समारोह में कृषि मेले में उद्योगों को शामिल करने का यह पहला प्रयास मध्यप्रदेश की नई दृष्टि को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि सिंचित क्षेत्र 7 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 55 से 60 लाख हैक्टेयर तक पहुंच गया है, जिससे प्रदेश की जीडीपी में कृषि का योगदान उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। प्रभारी मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि

प्रदेश सरकार किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने और उत्पादकता के साथ जीडीपी वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है। शुगर मिलों में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिये भूमि, बिजली और ऋण योजनाओं में विशेष रियायतें दी जा रही हैं। इससे कृषि क्षेत्र को बल मिलेगा, बेरोजगारी में कमी आएगी और आर्थिक समृद्धि के नए आयाम खुलेंगे। प्रभारी मंत्री श्री काश्यप ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया कि कृषि और उद्योग का यह सम्मिलन आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की दिशा में एक सकारात्मक और दूरदर्शी पहल है, जो किसानों और उद्योग दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की मिलेगी छूट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बताया है कि स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को दिन के टैरिफ में छूट प्रदान की जाएगी। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जाएगी। कंपनी ने कहा है कि यह छूट एलवी उपभोक्ता श्रेणियों के लिए विशिष्ट नियमों और शर्तों के आधार पर दिन के विभिन्न समय के दौरान खपत की अवधि के अनुसार ऊर्जा शुल्क पर लागू होगी।

एल.वी.-1 घरेलू और एल.वी.-3 सार्वजनिक जल कार्य और स्ट्रीट लाइट पीक ऑवर्स (सुबह) 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। इसी तरह एल.वी.-2= गैर-घरेलू और एल.वी.-4= एल.टी. औद्योगिक ऑफ पीक/ सौर समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। उपरोक्त दोनों ही श्रेणियों में यह छूट 10 किलोवाट से अधिक स्वीकृत लोड / अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को ही मिलेगी। वहीं स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए जिसमें एल.वी.-1 घरेलू, एल.वी.-2 गैर घरेलू, एल.वी.-3 सार्वजनिक जल कार्य और स्ट्रीट लाइट और एलवी-4 एलटी औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए ऑफ पीक/ सौर समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। यह छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड / अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को ही मिलेगी।

गांधी सागर बांध से 891.944 एमसीएम पानी छोड़ने की अनुमति जारी

भोपाल। मुख्य अभियंता जल संसाधन विभाग जयपुर द्वारा प्रदत्त अनापत्ति एवं अनुशंसा के तहत ग्रीनको ग्रुप द्वारा 1920 मेगावॉट पम्प स्टोरेज परियोजना के निर्माण के लिये गांधीसागर बांध से 891.944 एमसीएम जल प्रवाहित करने की निर्धारित शर्तों पर अनुमति जारी की गई है। प्रमुख अभियंता जल संसाधन विभाग भोपाल श्री विनोद कुमार देवड़ा ने मुख्य अभियंता जल संसाधन उज्जैन को निर्धारित शर्तों के अधीन पेयजल, सिंचाई और औद्योगिक उपयोग के लिए आवश्यक जल गांधीसागर बाँध में संग्रहित रखने के निर्देश दिये हैं। साथ ही यह भी कहा गया है कि बाँध से जल प्रवाहित करने के लिए निर्धारित ऑपरेशन मैन्यूअल/बाँध सुरक्षा के मापदण्डों का पालन करना होगा। बाँध से जल प्रवाहित किये जाने के लिए निर्धारित (म.प्र. एवं राजस्थान राज्य) अंतर्राज्यीय नियंत्रण समिति/सदस्यों से परस्पर समन्वय कर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। बाँध के निचले क्षेत्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक अलार्मिंग तंत्र के संज्ञान में लाकर जल प्रवाहित किये जाने की कार्रवाई की जाये। गांधीसागर जलाशय से प्रवाहित 891.944 एमसीएम जल के राणा प्रताप सागर बाँध में सुरक्षित संग्रहण एवं समुचित उपयोग के संबंध में राजस्थान राज्य के संबंधित मुख्य अभियंताओं से आवश्यक समन्वय किया जाए।

सुरक्षित रूप से जल प्रवाह के दौरान टीम का

विभाग की जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए आवंटित बजट का शत-प्रतिशत करें उपयोग : मंत्री चौहान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान ने कहा कि विभाग में जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए आवंटित बजट का शत-प्रतिशत उपयोग करें। आवंटित बजट का उपयोग शासन की मंशानुरूप अनुसूचित वर्ग के नागरिकों के कल्याण में किया जाए। यह बात मंत्री श्री चौहान ने गुरुवार को मंत्रालय में वित्तीय वर्ष 2025- 26 में बजट प्रावधान एवं व्यय की समीक्षा के दौरान कही। इस अवसर पर उन्होंने विभागीय कार्यों की प्रगति की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश भी दिए। प्रमुख सचिव श्री ई. रमेश कुमार, आयुक्त श्री धनंजय भदौरिया, अपर

आयुक्त संजय वार्ष्णेय सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। मंत्री श्री चौहान ने कहा कि अनुसूचित जाति विभाग अंतर्गत छात्रावासों में रिक्त सीटों की समीक्षा करें। उन्होंने कहा आगामी मई एवं जून माह में छात्रावासों की रिक्त सीटें भरने के लिए कार्य योजना बनाकर कार्य करें। मंत्री श्री चौहान ने कहा कि छात्रावास अधीक्षकों की कार्यशाला का आयोजन भी आगामी माह किया जाए। उन्होंने कहा कि परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षकों की पर्याप्त संख्या हो एवं पढ़ाई का स्तर भी प्रतियोगी परीक्षाओं के बदलते स्वरूप के अनुरूप हो, जिससे अनुसूचित जाति वर्ग के अधिक विद्यार्थी इन परीक्षाओं में सफल हो सके। उन्होंने कहा कि संभागवार प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की मांग के अनुसार कार्य योजना बनायी जाए। मंत्री श्री चौहान के कहा कि इस वित्तीय वर्ष में बजट के संपूर्ण व्यय की माइक्रो प्लानिंग कर बजट खर्च किया जाएं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना में जन-प्रतिनिधियों की मांगो का भी अनुसरण करें।

हर घर नल से जल: जल जीवन मिशन से गांवों में आई मुस्कान, स्वास्थ्य, समान और स्थायित्व की नई धारा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। गांवों की सुबह अब बदल गई है। बाल्टी लेकर दूर-दूर तक पानी लाने का संघर्ष बीते दिनों की बात हो चुकी है। अब घर के आंगन में नल से गिरता पानी केवल सुविधा नहीं, बल्कि गरिमा, सुरक्षा और विश्वास का प्रतीक बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शुरू हुआ जल जीवन मिशन आज ग्रामीण भारत की तस्वीर को जमीनी स्तर पर बदल रहा है और मध्यप्रदेश इसमें एक मिसाल बनकर उभरा है। बालाघाट जिले ने 96 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण घरों में नल से जल पहुंचाकर यह सिद्ध कर दिया है कि सुनियोजित प्रयासों से

हर घर तक शुद्ध पेयजल सुनिश्चित किया जा सकता है। इस मिशन के चलते वहां के गांवों में अब बीमारियों का बोझ घटा है, महिलाएं और बच्चियां राहत महसूस कर रही हैं और लोगों को स्वच्छ जीवन की आदतें सहजता से अपनाने का अवसर मिला है। इसी दिशा में हरदा जिले ने भी 96 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण परिवारों को इस योजना से जोड़ते हुए गांवों में स्वास्थ्य, स्वच्छता और आत्मनिर्भरता की एक नई लकीर खींच दी है। इंदौर जिले ने तो लगभग सम्पूर्ण लक्ष्य प्राप्त करते हुए 99.94 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों को नल जल सुविधा से जोड़ दिया है। इंदौर जैसे जिले, जहां शहरी चमक के साथ ग्रामीण विस्तार भी मौजूद है, वहां यह कार्यक्षमता दिखाना साबित करता है कि यह योजना हर क्षेत्र में समान रूप से कारगर हो रही है। दूसरी ओर नर्मदापुरम जिले ने भी 84प्रतिशत ग्रामीण घरों में नल जल कनेक्शन देकर साफ किया है कि वह भी इस परिवर्तन का सक्रिय भागीदार है और यहां की ग्राम पंचायतों ने जनसहभागिता से जल पहुंच को आसान और प्रभावशाली बनाया है।

कूप रिचार्ज पिट निर्माण में खंडवा जिले ने हासिल किया 100 फीसदी का लक्ष्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश पुराने जल स्त्रोतों को सहेजने, नया जीवन देने और किसानों को सिंचाई व पीने के लिए नलकूप, कुओं से पर्याप्त मात्रा में पानी मिले, इसके लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदेश भर में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। प्रदेश के सभी जिलों में मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) अंतर्गत खेत तालाब, कूप रिचार्ज पिट, सोख्ता गड्ढ़ा, बोरी बंधान सहित बारिश का पानी रोकने के लिए अन्य कार्य किए जा रहे हैं। इसके लिए सभी जिलों को लक्ष्य भी दिया गया है। खंडवा जिला प्रदेश का पहला ऐसा जिला बना है, जिसने कूप रिचार्ज पिट निर्माण में 100 फीसदी का लक्ष्य हासिल किया है। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत खंडवा जिले को 4 हजार 700 कूप रिचार्ज पिट बनाने का लक्ष्य मिला था, जिसे समय से पहले और लक्ष्य से अधिक पूरा कर लिया गया है। जिले में 4 हजार 838 कूप रिचार्ज पिट बनाए गए हैं। जिला पंचायत सीईओ खंडवा श्री नागार्जुन बी. गौड़ा ने बताया कि कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता के मार्गदर्शन में जिले में 15 हजार कूप रिचार्ज पिट बनाए जा रहे हैं, करीब 10 हजार का कार्य प्रगतिरत है।

बारिश के पानी का संचयन करने के लिए भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल संचय, जन भागीदारी अभियान राष्ट्रीय अभियान चलाया जा रहा है, इसमें देश के सभी जिलों में बारिश के पानी को एकत्र करने के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग रिचार्ज पिट, स्टॉप डैम, सोख्ता गड्ढा सहित विभिन्न प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश का खंड़वा जिला स्थिति में देश में तीसरे नंबर पर है। प्रदेश में बारिश के पानी को सहेजने, पुराने जल स्त्रातों को संवारने के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदेशभर में 30 मार्च 2025 से 30 जून 2025 तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने विश्व रेडक्रॉस दिवस पर मानवता के सेवकों को किया नमन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व रेडक्रॉस दिवस 2025 के अवसर पर किसी भी संकट की घड़ी में मानवता की सेवा में तत्पर स्वयंसेवकों को सादर नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि विश्व बंधुत्व और मानव कल्याण की भावना से कार्य करने वाले ये स्वयंसेवक समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। उन्होंने कहा कि रेडक्रॉस के स्वयंसेवक विपरीत परिस्थितियों में भी मानव जीवन की रक्षा और सहायता के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। संकट में फंसे नागरिकों को राहत पहुंचाना , जीवन रक्षक सहायता देना और सामाजिक समरसता बनाए रखना इनका परम कर्तव्य है। ऐसे सेवाभावी लोग मानवता के सच्चे प्रहरी हैं। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के सभी नागरिकों से अपील की है कि वे समाज सेवा के कार्यों में आगे आएं और जरूरतमंदों की सहायता करें।

विश्व रेडक्रॉस दिवस हर साल 8 मई को मनाया जाता है, जो रेडक्रॉस के संस्थापक श्री हेनरी ड्यूनेंट की जयंती का प्रतीक है। यह दिन मानव सेवा, करुणा और दया के मूल्यों को सम्मानित करने का अवसर प्रदान करता है।

रायपुर कर्चुलियान में ग्रामीण विकास विभाग के कार्यों की हुई समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर साहब ने जनपद पंचायत रायपुर कर्चुलियान में जल गंगा अभियान के कार्यों की समीक्षा करते हुए आगामी तीन दिवस में सभी कार्य प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने कम प्रगति वाली 72 ग्राम पंचायतों के सचिव एवं ग्राम रोजगार सहायकों को नोटिस जारी करने तथा बगैर अनुमति अनुपस्थित सचिव एवं ग्राम रोजगार सहायकों के विरूद्ध कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिए।

जनपद कार्यालय में आयोजित बैठक में ग्राम पंचायतों में चल रहे कार्यों में 14 मई तक सीसी जारी करने तथा आवास के लक्ष्य को पूर्ण करने के साथ साथ सभी ग्राम पंचायतों में समग्र में के लक्ष्य को 30 मई के पूर्व पूर्ण करने के निर्देश सीईओ जिला पंचायत द्वारा दिये गये। बैठक में कार्यपालन यंत्री टी पी गुर्दमान,परियोजना अधिकारी मनरेगा शिव सोनी,लेखा अधिकारी योगेंद्र पांडेय, आवास प्रभारी विनोद पांडेय,जनपद सीईओ संजय सिंह, अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी डॉ. जी. एन. श्रीवास्तव,सहायकयंत्री मनीषा मिश्रा, अनिल तिवारी, इंद्रभान सिंह, मनोज मिश्रा, विभा अवस्थी, बृजेश दुबे सहित जनपद के उपयंत्री, एडीओ, पीसीओ,ग्राम पंचायतों के सरपंच,सचिव एवं ग्राम रोजगार सहायक उपस्थित रहे।

नि :शुल्क प्रशिक्षण के लिए आवेदन 15 मई तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश अनुसूचित जाति कल्याण द्वारा संचालित परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र में बैंकिंग, रेलवे, एसएससी, बीमा, नर्सिंग एवं म.प्र. कर्मचारी चयन मण्डल में चयन के लिये अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों से आगामी 15 मई तक आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। इस संबंध में प्राचार्य परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र ने बताया कि आवेदन पत्र स्वयं अथवा रजिस्टर्ड डाक से कार्यालय में जमा किये जा सकते हैं। आवेदक मध्यप्रदेश का मूल निवासी तथा अनुसूचित जाति अथवा जनजातीय का सदस्य होना चाहिए। आवेदक की आयु 18 से 35 वर्ष के बीच हो। आवेदक के परिवार की वार्षिक आय 6 लाख रूपये से अधिक नहीं होनी चाहिए। आवेदक को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तय की गयी न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता रखता हो। प्रशिक्षण के लिए चयनित होने पर प्रशिणार्थी को 500 रूपये सुरक्षानिधि जमा करके अनुबंध के अनुसार प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जायेगा। इस संबंध में विस्तृत जानकारी परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र शा. ज्ञानोदय विद्यालय अनुसूचित जाति कल्याण विभाग परिसर से प्राप्त की जा सकती है। जानकारी प्राप्त करने के लिए फोन नंबर 07662-299221 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

अरहर के लिए किसानों का पंजीयन 15 मई तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य 7550 रुपए प्रति क्विंटल पर जिले भर में अरहर का उपार्जन किया जाएगा। खरीफ वर्ष 2024-25 में ई उपार्जन पोर्टल पर अरहर (तुअर) फसल के उपार्जन के लिए किसानों का पंजीयन 15 मई तक होगा तथा सत्यापन 17 मई तक किया जायेगा। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा है कि उपार्जन के लिए किसान ई उपार्जन पोर्टल में अपना पंजीयन 15 मई से पहले करा लें। सभी सहकारी समिति प्रबंधक तुअर उपार्जन के लिए किसानों का पंजीयन सुनिश्चित करें। पंजीकृत किसानों को ही समर्थन मूल्य पर तुअर के उपार्जन का लाभ मिलेगा।

अरसद अंसारी को किया जिला बदर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।. मऊगंज जिला दण्डाधिकारी संजय कुमार जैन द्वारा रिंकू उर्फ अरसद अंसारी को जिला बदर किये जाने का आदेश दिया गया है। जिला दण्डाधिकारी ने रिंकू उर्फ अरसद अंसारी पिता इबरान निवासी मऊगंज वार्ड क्रमांक 6 को मऊगंज एवं उससे लगे सीमावर्ती जिले सीधी एवं रीवा की राजस्व सीमाओं से एक वर्ष की अवधि के लिये निष्कासित करने का आदेश दिया है। उन्होंने आदेश प्राप्ति के 48 घंटे के अंदर जिले की सीमा से बाहर चले जाने का आदेश पारित किया है। आदेश का उल्लंघन करने पर म.प्र. राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 14 के तहत कार्यवाही की जायेगी।

तीन पंचायत सचिव निलंबित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर ने तीन पंचायत सचिवों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। समीक्षा बैठक में अनुपस्थित रहने तथा शासकीय कार्य में लापरवाही बरतने पर रामप्रताप सेन सचिव ग्राम पंचायत बेलवा बड़गैयान, ध्रुवकेस सिंह सचिव ग्राम पंचायत बड़ोखर तथा शशिकांत मिश्रा सचिव ग्राम पंचायत अगड़ाल (मूल पदस्थापना ग्राम पंचायत तेंदुआ कोठार) को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है।

समर्थन मूल्य पर 100672 टन हुई गेंहू की खरीद

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों को उनकी उपज का अधिकतम मूल्य देने के लिए निर्धारित समर्थन मूल्य पर पंजीकृत किसानों से गेंहू का उपार्जन किया गया। जिले में 17477 किसानों से 100672.32 मीट्रिक टन गेंहू का उपार्जन किया गया है। इस संबंध में जिला आपूर्ति अधिकारी कमलेश तांडेकर ने बताया कि उपार्जित गेंहू में से 66363.17 टन गेंहू का परिवहन करके सुरक्षित भण्डारण कराया जा चुका है। अब तक किसानों को 244 करोड़ 13 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। शेष किसानों को तीन दिन में लंबित राशि का भुगतान किया जा रहा है। खरीदी केन्द्रों से उपार्जित गेंहू का लगातार परिवहन करके सुरक्षित भण्डारण कराया जा रहा है।

गेंहू उपार्जन के भुगतान कराने के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अपर मुख्य सचिव खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति ने भोपाल से वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से खाद्य सुरक्षा योजना के पात्र हितग्राहियों के शत-प्रतिशत ई केवाईसी कराने के निर्देश देते हुए कहा कि अभियान चलाकर शेष सदस्यों की ई केवाईसी अपडेट कराएं। इसके साथ-साथ विषमता परिवार, मृतक हितग्राही तथा स्थाई रूप से पलायन करने वाले व्यक्तियों के नाम पोर्टल से पृथक करें। जो व्यक्ति ई केवाईसी कराने नहीं आ रहे हैं उनके नाम भी पोर्टल से हटाएं। यदि हितग्राही वर्तमान में निर्धारित निवास स्थान से बाहर हैं तो उसे ऐप के माध्यम से ई केवाईसी अपडेट करने की सूचना दें। उन्होंने कहा कि उक्त कार्य नियत समय सीमा में किया जाना अनिवार्य है। अपर मुख्य सचिव ने समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेंहू का किसानों को भुगतान करने तथा उपार्जन केन्द्र से शत-प्रतिश परिवहन किए जाने के निर्देश वीडियो कान्फ्रेंसिंग में दिए। उन्होंने धान उपार्जन में शॉर्टेज की वसूली किए जाने के निर्देश देते हुए कहा कि धान मिलर्स की जो जाँच प्रक्रियाधीन है उसे शीघ्र निराकृत करें। कमिश्नर कार्यालय के एनआईसी कक्ष में वीडियो कान्फ्रेंसिंग के दौरान आयुक्त रीवा संभाग बीएस जामोद, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

खेलवृत्ति के लिए आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संचालनालय खेल एवं युवा कल्याण द्वारा एक अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक राज्य स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। इस प्रतियोगिता के पदक विजेता प्रतिभावान खिलाड़ियों को खेलवृत्ति प्रदान की जायेगी। इस संबंध में संभागीय खेल और युवा कल्याण अधिकारी ने बताया कि जिले के प्रतिभावान पदक विजेता खिलाड़ियों से वर्ष 2025 की राज्य स्तरीय खेलवृत्ति प्रदान करने के आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। खेलवृत्ति के लिए आवेदन की अंतिम तिथि आगामी 31 मई निर्धारित की गयी है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जायेगा। खेलवृत्ति के लिए आवेदन संबंधी जानकारी संभागीय खेल और युवा कल्याण कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी ने बताया कि राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी को 10 हजार रूपये रजक पदक विजेता खिलाड़ी को 8 हजार रूपये और कांस्य पदक विजेता खिलाड़ी को 6 हजार रूपये खेलवृत्ति राशि प्रदान करने का प्रावधान है।

रीवा पुलिस ने नशीली कफ सिरप सहित तीन तस्करों को कार सहित पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा पुलिस ने नशे पर प्रहार अभियान के तहत बड़ी कारवाही करते हुए ज़िले के रायपुर करचुलियान थाना क्षेत्र में भारी मात्रा में नशीली कफ सिरप सहित तीन तस्करों को पकड़ा है। जिनसे पूछताछ की जा रही है। इस पूरी कार्यवाही को लेकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आरती सिंह ने बताया कि पुलिस अधिकारियों को मुखबिर के माध्यम से सूचना मिली थी कि एक्स यूवी कार में नशे की खेप मिर्ज़ापुर से रीवा की ओर लाई जा रही है।

जिसके बाद एसडी ओपी उदित मिश्रा के नेतृत्व में तीन टीमें गठित की गई इन टीमों में गुढ़ थाना प्रभारी शैल यादव, अमहिया थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल और रायपुर करचुलियान थाना प्रभारी अतुल त्रिपाठी को रखा गया। तीनों टीमों ने अलग-अलग स्थानों पर वाहन को लोकेट किया और रायपुर करचुलियान थाना क्षेत्र के जुगनहाई टोल प्लाज़ा के समीप घेराबंदी कर पकड़ा गया। इस दौरान वाहन की ली गई तलाशी में 915 शीशी नशीली कफ सिरप ज़ब्त की गई। जबकि वाहन में बैठे हुए अंकित विश्वकर्मा निवासी गुढ़, अभय पांडे निवासी हनुमाना और एक अन्य को गिरफ्तार किया गया है।

नेशनल लोक अदालत का आयोजन आज, 42 खण्डपीठों में होगी प्रकरणों की सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के मार्गदर्शन में 10 मई को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आपसी सुलह से प्रकरणों का निराकरण किया जायेगा। प्रकरणों की सुनवाई के लिए 42 खण्डपीठें गठित की गयी हैं। इनमें पीठासीन अधिकारी तथा सहयोग देने के लिए सुलहकर्ता सदस्य तैनात किये गये हैं। जिला न्यायालय परिसर रीवा के साथ-साथ तहसील न्यायालय सिरमौर, त्योंथर, मनगवां, मऊगंज एवं हनुमना में भी लोक अदालतों का आयोजन किया जा रहा है। जिला न्यायालय में 23 खण्डपीठ, तहसील विधिक सेवा समिति मऊगंज में 6 खण्डपीठ, सिरमौर में 4 खण्डपीठ, त्योंथर में 3, मनगवां में एक खण्डपीठ एवं तहसील विधिक सेवा समिति हनुमना में एक खण्डपीठ गठित की गयी हैं। लोक अदालत के दीवानी, फौजदारी, पारिवारिक विवाद, मोटर दुर्घटना क्षतिपूर्ति (क्लेम), 138 चेक बाउंस, विद्युत, श्रम, भू-अर्जन, नगर पालिका निगम, प्री लिटिगेशन प्रकरण निराकरण के लिए रखे जायेगें।

नेशनल लोक अदालत में प्रकरणों के निराकरण के लिए खण्डपीठ क्रमांक एक में जिला न्यायाधीश असरफ अली, खण्डपीठ क्रमांक 2 में सुधीर सिंह राठौड, जिला न्यायाधीश संदीप वास्तव, खण्डपीठ क्रमांक 3 में, खण्डपीठ क्रमांक 4 में जिला न्यायाधीश मोहित कुमार, खण्डपीठ क्रमांक 5 में जिला न्यायाधीश आशीष कुमार शुक्ला, खण्डपीठ क्रमांक 6 में न्यायाधीश शरद कुमार गुप्ता तथा खण्डपीठ क्रमांक 7 में न्यायाधीश अनुज त्यागी को तैनात किया गया है। इसी तरह खण्डपीठ क्रमांक 8 में न्यायाधीश सुधीर सिंह ठाकुर, खण्डपीठ क्रमांक 9 में न्यायाधीश वारीन्द्र कुमार तिवारी, खण्डपीठ क्रमांक 10 में न्यायाधीश आशीर्वाद भिलाला, खण्डपीठ क्रमांक 11 में न्यायाधीश शशांक खरे, खण्डपीठ क्रमांक 12 में न्यायाधीश यशपाल सिंह, खण्डपीठ क्रमांक 13 में न्यायाधीश संतोष कुमार तिवारी, खण्डपीठ क्रमांक 14 में न्यायाधीश अनु सिंह, खण्डपीठ क्रमांक 15 में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शिवानी शर्मा, खण्डपीठ क्रमांक 16 में वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश पन्ना नागेश प्रकरणों की सुनवाई करेंगे।

इसी प्रकार खण्डपीठ 17 में वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश वरूण शर्मा, खण्डपीठ क्रमांक 18 में वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश दयाल सिंह सूर्यवंशी, खण्डपीठ क्रमांक 19 में वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश शैलेन्द्र रैकवार, खण्डपीठ क्रमांक 20 में वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश आरती सिंह, खण्डपीठ क्रमांक 21 में वरिष्ठ खण्ड न्यायाधीश मुकेश कुमार कोरी, खण्डपीठ क्रमांक 22 में कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश सु कंचन सैनिक, खण्डपीठ क्रमांक 23 में प्रथम व्यवहार न्यायाधीश रंजीत भदकरिया, खण्डपीठ क्रमांक 24 में प्रधान न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय अविनाश चंद्र तिवारी, खण्डपीठ क्रमांक 25 मे अध्यक्ष जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण फोरम सुदीप कुमार वास्तव, खण्डपीठ क्रमांक 26 में औद्योगिक न्यायालय में न्यायाधीश केके मिश्रा तथा खण्डपीठ क्रमांक 27 में श्रम न्यायालय में न्यायाधीश अमित नगायच प्रकरणों की सुनवाई करेंगे।

मऊगंज न्यायालय परिसर में खण्डपीठ क्रमांक 28 में जिला न्यायाधीश जय सिंह सरौते, खण्डपीठ क्रमांक 29 में न्यायाधीश मनोज तिवारी, खण्डपीठ क्रमांक 30 में न्यायाधीश हीरालाल अलावा, खण्डपीठ क्रमांक 31 में व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ साजिद मोहम्मद, खण्डपीठ क्रमांक 32 मे न्यायिक मजिस्ट्रेट कनिष्ठ सु ओशी जैन, खण्डपीठ क्रमांक 33 में न्यायाधीश युवराज दीक्षित प्रकरणों की सुनवाई करेंगे। तहसील न्यायालय परिसर सिरमौर में खण्डपीठ क्रमांक 34 में न्यायाधीश रामसिंह कनौजिया, खण्डपीठ क्रमांक 35 में न्यायाधीश संजय वर्मा, खण्डपीठ क्रमांक 36 में न्यायिक मजिस्ट्रेट भारती केशरी कश्यप, खण्डपीठ क्रमांक 37 में न्यायिक मजिस्ट्रेट रजनीश ताम्रकार प्रकरणों की सुनवाई करेंगे।

तहसील न्यायालय परिसर त्योंथर में खण्डपीठ क्रमांक 38 में जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश दयाराम कुमरे, खण्डपीठ क्रमांक 39 में न्यायाधीश कामनी प्रजापति, खण्डपीठ क्रमांक 40 में व्यवहार न्यायाधीश सु मोहनी भदौरिया, तहसील न्यायालय परिसर हनुमना में खण्डपीठ क्रमांक 41 में न्यायाधीश संदीप कुमार नामदेव तथा तहसील न्यायालय मनगवां में खण्डपीठ क्रमांक 42 में न्यायाधीश यश अबिद्रा प्रकरणों की सुनवाई करेंगे।

पैर पर पड़ी बेड़ी लोहे की हो या सोने की दोनों का काम है बांधना

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कभी-कभी जीवन में ऐसा धर्म भी बंधन हो जाता है जो स्वार्थ एवं अभियान से प्रेरित हो उसके लिए ईश्वर के यहां दंड प्राविधान भी है पैर पर पड़ी बेड़ी लोहे की हो या सोने की दोनों का काम है बांधना। उक्त प्रवचन श्री भागवत महापुराण कथा में ज्ञान का श्रवणा करा रहे कथा वाचक पंडित अशोक बाजपेयी जी ने श्री धामा आश्रम में महंत स्वामी ईश्वर दास उदासीन जी के सानिध्य में चल रहे भागवत महापुराण कथा के चौथे दिन दिए।

बाजपेई जी ने भक्तों पर अमृत की वर्षा करते हुए गजेंद्र मोक्ष की चर्चा के पश्चात बाली प्रसंग पर उन्होंने कहा बाली की अति महत्वाकांक्षा ही उनके बंधन का कारण बनी कभी-कभी जीवन में ऐसा धर्म भी बंधन हो जाता है जो स्वार्थ एवं अभियान से प्रेरित हो उसके लिए ईश्वर के यहां दंड प्राविधान भी है पैर पर पड़ी बेडी लोहे की हो या सोने की दोनों का काम है बांधना धर्म का बंधन नहीं मुक्ति है धर्म एक जागरण है मूर्छा नहीं धर्म जब मूर्छा बन जाये आपका अहित होगा क्योंकि मूर्छित व्यक्ति से कभी भी शुभ अपेक्षा नहीं की जा सकती कभी मूर्च्छा को हटाने के लिए वैध को कठोरता बरतनी पड़ती है बाली के बांधकर भगवान ने यही समझाने का प्रयास किया है ततपश्चात भगवान श्री कृष्ण प्राकट्य की लीला सुनाई भगवान जन्ममरण से परे हैं अतः उनका प्राकट्य होता हैं।

आश्रम के ओमप्रकाश उदासीन जी ने जानकारी देते हुए बताया 11 मई रविवार को पूर्णाहुति एवं भंडारे का आयोजन किया गया है। स्वामी जी ने सभी भक्तगणों से भागवत कथा में पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करने का अनुरोध किया है।

सिन्धु विकास समिति को किया गया सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना सरस्वती विद्यापीठ के सभागार में विगत दिवस हिन्दू पर्व समन्वय समिति द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में समाजसेवी संस्था सिन्धु विकास समिति को अध्यक्ष श्री मणिकांत माहेश्वरी एवं कमल सेठी जी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

उल्लेखनीय है हिन्दू पर्व समन्वय समिति द्वारा आयोजित रामनवमी शोभायात्रा में सिन्धु विकास समिति परिवार "रक्तदान जागरूकता अभियान" की झांकी के साथ शामिल हुआ था।

यह सम्मान संस्था के संरक्षक मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी महामंत्री घनश्याम मँघरानी मंत्री संजय वाधवानी अशोक चांदवानी दीपक वाधवानी कमल पुरस्वानी अनिल मोटवानी दिलीप सोनी मनीष सदानी ने ग्रहण किया।

संस्था के सम्मानित होने पर श्रीचन्द मनवानी गोपी गेलानी ज्ञान खटवानी इंद्रलाल आडवाणी रंजीत सेनानी मनमोहन माहेश्वरी विभाष बनर्जी जेठनंद वाधवानी आकाश बनर्जी महेश रावलानी संजय आहूजा समाज सेविका राखी होतचंदानी मोना चोपड़ा डॉक्टर मनीषा सोई कशिश नागदेव आभा सिंह डॉ. विद्या पांडे ने प्रशंसा व्यक्त करते हुए बधाई प्रेषित की है।

ईकेवायसी कराने हेतु आज से कैंप का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पात्र हितग्राहियो का 15 मई तक शत प्रतिशत ईकेवायसी पूर्ण किये जाने हेतु शिविर आयोजित कर निर्देशित किया गया है। तत्संबंध में ईकेवाइसी करने हेतु ग्राम/पंचायत/वार्ड स्तर पर विक्रेता शासकीय उचित मूल्य दुकान एवं वार्ड प्रभारी एवं ग्राम पंचायत सचिव/रोजग्रार सहायक दल गठन किया गया है। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने गठित दल द्वारा ग्रामवार/मोहल्लेवार कैंप लगाकर हितग्राहियो के ईकेवाइसी करने एवं ग्राम में शेष समस्त हितग्राहियो के ईकेवाइसी करने के उपरान्त ही अन्य ग्राम/मोहल्ले मे कैम्प आयोजित किये जाने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को आयोजित कैम्पो की सतत मानिटरिंग करने के साथ ही ईकेवाइसी के दौरान परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु होने, स्थाई रूप से प्रवास पर जाने आदि कारणों से) एवं डुप्लीकेट होने पर एम राशन मित्र पोर्टल पर स्थानीय निकाय के लॉगिन विलोपन हेतु प्रविष्टी करने के निर्देश दिये हैं। कलेक्टर ने 10 मई से 12 मई तक वार्डवार शिविर लगाकर ईकेवाइसी कराने के निर्देश दिये हैं।

नगर परिषद डभौरा के वार्ड क्रमांक 2 की आम जनता में मचा पेयजल को लेकर मचा कोहराम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्य प्रदेश की कुर्सी पर बैठे भारतीय जनता पार्टी के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव के द्वारा जहां स्वच्छता एवं जन समस्याओं को लेकर आए दिन कर्मचारियों को दिशा निर्देश देते रहते हैं तथा उनका प्रयास रहता है कि आम जनता में खुशी का माहौल रहे भारतीय जनता पार्टी और सरकार के प्रति विश्वास बना रहे वही चंद पैसों की लालच में या फिर लापरवाही बस कर्मचारियों के द्वारा उदासीनता बढ़ता जा रहा है जिस कारण आम जनता परेशान होती रहती है जिसका जीता जागता उदाहरण रीवा जिले के नगर परिषद डभौरा के वार्ड क्रमांक 2 का मामला है यहां की गरीब आदिवासी एवं ओबीसी तथा आम जनता दो वर्षो से भीषण गर्मी में एक-एक बूंद पानी के लिए एक-एक किलोमीटर जाकर पानी लाने के लिए मजबूर हैं पानी की टंकी नगर परिषद के द्वारा रखवाई गई है लेकिन उसके अंदर पानी नहीं है और लोग पानी पीने के लिए परेशान हो रहे हैं और तो और नगर परिषद के कर्मचारियों के लापरवाही बस वार्ड क्रमांक 2 में कभी भी साफ सफाई का कार्य नहीं किया जाता है गंदगी का अब्बार लगा हुआ है सफाई कर्मी कहां घूमते रहते हैं इस बात की तस्दीग तो सीएमओ नगर परिषद डभौरा ज्ञानेंद्र मिश्रा तथा नगर परिषद की अध्यक्ष माया गुप्ता ही कर सकती हैं क्योंकि इन्हीं को आम जनता की सेवा करने का अधिकार मिला है अब देखना तो यह है कि नगर परिषद डभौरा के अध्यक्ष और सीएमओ के कानों में जू रेगती है या नंही अब देखना तो यह है कि क्षेत्रीय विधायक और जिला कलेक्टर रीवा के द्वारा आम जनता को कितना जल्दी राहत दिया जाएगा।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रीवा (म.प्र.)

क्रमांक-160 प्रारूप दिनांक 08.05.2025

वैध की जाने वाली कालोनियो का अंतिम प्रकाशन

नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्रान्तर्गत दिनांक 31.12.2016 तक निर्मित अवैध कालोनियों के नियमितीकरण हेतु नियम 23 (3) के परिपेक्ष्य में सार्वजनिक सूचना क्र. 15 दिनांक 07.04.2025 को जारी कर 15 दिवस के भीतर अधिसूचित कालोनियों के नियमितीकरण के संबंध में दावे / आपत्ति बुलाए गये थे। परन्तु अधोलिखित कालोनियों के में कोई आपत्तिया नहीं प्राप्त हुई है। बाद-म्याद समाप्त कर यह गामा जा रहा है। कि किसी को उक्त के संबंध में कुछ नहीं कहना अद्योलिखित कालोनियों नियमितीकरण हेतु योग्य पाई गई है। जिन्हे नियम 23 (3) की शर्तों एवं प्रावधानों के तहत वैध करने हेतु रजिस्ट्रीकृत किया जा रहा है। कालोनियों का विवरण निम्नानुसार है।

क्र.	अनाधिकृत कालोनी का प्रचलित नाम (यदि हो तो)	स्थान एवं वार्ड क्र.	अनाधिकृत कालोनी के विकास कर्ताओं का नाम एवं पता	भूमि का विवरण राजस्व ग्राम एवं खसरा नं.	कुल क्षेत्रफल	अन्य विवरण
1	2	3	4	5	6	7
1	कोमल कालोनी जिला रीवा (म.प्र.)	ग्राम— अन्नतपुर तहसील हुजूर वार्ड क्रमांक 10 जिला रीवा (म.प्र.)	श्री मनोज कुमार पिता श्री कोमलराम अनन्तपुर जिला रीवा (म0प्र0)	राजस्व ग्राम — अनन्तपुर खसरा क्रमांक 976, (As List) 676 Prasent	0.86 एकड़	दावा आपत्ति प्राप्त नही हुई है।
2	कुशुम कालोनी जिला रीवा (म.प्र.)	ग्राम— अन्नतपुर तहसील हुजूर वार्ड क्रमांक 10 जिला रीवा (म.प्र.)	श्रीमती कुशुम शुक्ला पिता श्री के.पी.शुक्ला अनन्तपुर जिला रीवा (म0प्र0)	राजस्व ग्राम — अनन्तपुर खसरा क्रमांक 906	0.99 एकड़	दावा आपत्ति प्राप्त नही हुई है।
3	गैबी कालोनी जिला रीवा (म.प्र.)	ग्राम — बरा तहसील हुजूर वार्ड क्रमांक 14 जिला रीवा (म.प्र.)	श्री कैलास चन्द पिता श्री गैबी प्रसाद नेहरु नगर बरा जिला रीवा (म.प्र.)	राजस्व ग्राम — बरा खसरा क्रमांक 2311	0.76 एकड़	दावा आपत्ति प्राप्त नही हुई है।
4	सुरेन्द्र कालोनी जिला रीवा (म.प्र.)	ग्राम — रीवा (खास) तहसील हुजूर वार्ड क्र. 24 जिला रीवा (म.प्र.)	श्री सुरेन्द्र कुमार, सुरेश कुमार, तनय रामदतद, यादवेन्द्र मणि, तनय बिष्णुतदत्त, श्रीमती राजकुमारी, पत्नी कृष्ण, कुमार संजय, अजय, अरविन्द पिता श्री कृष्णकुमार, केतकी बाई पति कामता प्रसाद, सच्चिदानंद निर्विकारानंद्र पिता कामता प्रसाद, कृष्णानंद दीपक पिता कृष्णनंद, मनोज कुमार,संतोष पिता सुनील कुमार, द्वारिका नगर रीवा (खास) तहसील हुजूर जिला रीवा (म.प्र.)	राजस्व ग्राम — रीवा (खास) खसरा क्रमांक 765 / 24	0.303 हेक्टेयर	दावा आपत्ति प्राप्त नही हुई है।

उपरोक्त कॉलोनियो में कोई दावा आपत्तियों प्राप्त नहीं हुई है। जिनका विनिश्चय सक्षम प्राधिकारी द्वारा किया जा चुका है, उनका अंतिम प्रकाशन म.प्र. नगर पालिका (कालोनी विकास) नियम 2021 के नियम 23 में विहित प्रावधानों के तहत रजिस्ट्रीकृत करते हुए अग्रिम कार्यवाही की जानी है।

(आयुक्त महोदय से अनुमोदित)

जोनल अधिकारी/ नोडल अधिकारी
(कालोनी सेल)
हेतु आयुक्त
नगर पालिक निगम रीवा (म.प्र.)

विचार

चीन ने पाकिस्तान को सौंपी पीएल-15 मिसाइल प्रणाली

चीन ने पाकिस्तान को अपनी उन्नत पीएल -15 एयर-टू-एयर मिसाइल प्रणाली सौंप दी है।जिससे दक्षिण एशिया में सामरिक संतुलन पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। चीन अब खुलकर पाकिस्तान के समर्थन में आ गया है। जिसके कारण भारत की परेशानी आगे चलकर बढ़ सकती है।यह मिसाइल लॉन्ग-रेंज एयर टू एयर कैटेगरी की है। जिसकी मारक क्षमता 200 से 300 किलोमीटर की बताई जा रही है। पीएल -15 मिसाइल को चीन ने आधुनिक लड़ाकू विमानों जे -10सी और जे -20 के साथ जोडा है। चीन इस सिस्टम को पाकिस्तान वायुसेना के जेएफ -17 ब्लॉक-3 फाइटर जेट्स मैं शामिल करने में चीन द्वारा मदद की जा रही है। चीन की यह कार्यवाही चीन-पाकिस्तान के बीच ठोस रणनीतिक साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है। चीन ने पाकिस्तान को जो रक्षा प्रणाली दी थी वह भारत की रक्षा प्रणाली का मुकाबला नहीं कर पाई। जिसके कारण पाकिस्तान को बड़ा नुकसान हुआ है। भारत ने लक्ष्य पर निशाना साधकर सैकड़ों आतंकवादियों को मौत के घाट उतारने और पाकिस्तान की सुरक्षा प्रणाली को जिस तरह से भारतीय सेना ने ध्वस्त किया है। उससे पाकिस्तान के साथ-साथ चीन की चिंता भी बढ़ गई है। चीन ने अपनी सबसे उन्नत पीएल-15 एअर टू एअर प्रणाली पाकिस्तान में तैनात कर दी है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है, इससे भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ बढ़ सकती हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच हो रहे इस युद्ध का लाभ चीन भी लेना चाहता है। वर्तमान स्थिति में चीन के दोनों हाथ में लड्डू हैं। एक हाथ में पाकिस्तान है, दूसरे हाथ में भारत है। पीएल -15 मिसाइल भारतीय वायुसेना के राफेल और तेजस जैसे विमान को लंबी दूरी से निशाना बना सकती है। यह मिसाइल सक्रिय रडार होमिंग प्रणाली से लैस है। इलेक्ट्रॉनिक जैमिंग से बचने में इसे सक्षम माना जाता है। भारत और पाक के बीच में जब युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं। ऐसी स्थिति में चीन द्वारा पाकिस्तान को जो सैन्य सहायता दी जा रही है। वह भारत के लिए बड़ी चिंता का विषय है। पाकिस्तान और चीन दोनों ही भारत के पड़ोसी देश हैं। भारत का दोनों देशों के साथ सीमा पर तनाव बना हुआ है। वर्तमान स्थिति का चीन फायदा उठाना चाहता है। वह पाकिस्तान के पक्ष में खुलकर सामने आ गया है। निश्चित रूप से चीन की प्रतिस्पर्धा भारत के साथ है। भारत जितना कमजोर होगा, उतना ही वह चीन के ऊपर निर्भर होगा, ऐसा हमेशा से चीन सोचता है। पिछले एक दशक में चीन ने भारत के पड़ोसी देशों के साथ जिस तरह के रिश्ते विकसित किए हैं। भारत के पड़ोसी देशों को आर्थिक सहायता देते हुए। उन देशों के साथ व्यापारिक और सैन्य संबंधों को मजबूत किया है। भारत की पड़ोसी देशों के साथ दूरियां बढ़ी है।

जेनेरिक दवाएं लिखने के कानूनी आदेश का उजाला

सुप्रीम कोर्ट ने डॉ टरों को मरीजों के लिए जेनेरिक दवाइयां लिखने एवं किसी विशेष कंपनी की दवाइयां न लिखने की नसीहत देकर न केवल गरीब मरीजों को राहत पहुंचाई है बल्कि चिकित्सा क्षेत्र में व्याप्त मनमानी, मूल्यहीनता, रिश्वत एवं अनैतिकता पर अंकुश लगाने की दिशा में सराहनीय एवं प्रासंगिक पहल की है। सुप्रीम कोर्ट से पहले राजस्थान उच्च न्यायालय ने भी ऐसा ही फैसला सुनाया था। सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की पीठ संदीप मेहता, विक्रम नाथ और संजय करोल ने दवा कंपनियों से जुड़ी याचिका की सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की है। इस याचिका में दवा कंपनियों पर मनमानी एवं रिश्वतखोरी का आरोप लगाया गया था। ऐसे में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि अगर पूरे देश में इस फैसले का पालन हो, तो इससे अहम सुधार हो सकता है। मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा-डॉ टरों पर अ सर दवा कंपनियों से रिश्वत लेने का आरोप लगता है।

ऐसे में अगर डॉक्टर जेनेरिक दवाएं लिखेंगे, तो उनपर लगने वाले इल्जाम का मुद्दा भी हल हो जाएगा। ऐसा करने से एक बड़ी आबादी को सस्ती एवं अचूक दवाओं का लाभ मिल सकेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जेनेरिक दवाइयों को जनव्यापी बनाने की दिशा में सार्थक पहल की है। पूरी दुनिया में जेनेरिक दवाइयों को ज्यादा स्वीकार्य बनाने के लिए व्यापक स्तर पर काम हो रहा है, लेकिन दवा माफिया इसमें बाधाएं खड़ी कर रहा है। सर्वोच्च न्यायालय की सक्रियता से दवा कंपनियों व चिकित्सकों के अपवित्र गठबंधन को तोड़ा जा सकता है, जो बड़ी आबादी की एक बड़ी समस्या का सटीक समाधान होगा। निश्चित ही डॉक्टर अगर सिर्फ जेनेरिक दवाएं लिखें तो दवा कंपनियों की रिश्वतखोरी बंद हो सकती है। शीर्ष अदालत उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें फार्मास्युटिकल मार्केटिंग की समान संहिता पर कानून बनने तक दवा कंपनियों की अनैतिक विपणन प्रथाओं को नियंत्रित करने के दिशा-निर्देश की मांग की गई थी। भारत में किफायती जेनेरिक दवाओं का उत्पादन एवं प्रचलन एक जीवन रेखा है, लेकिन इसके गुणवत्ता के आश्वासन को मजबूत करने के साथ डाक्टरों की मनमानी पर नियंत्रण करना होगा, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय की पहल एक रोशनी बनेगा। आज जबकि देश में लाइफ़स्टाइल से जुड़ी बीमारियां तेज़ी से बढ़ रही हैं, जैसे-जैसे चिकित्सा-विज्ञान का विकास हो रहा है, नयी-नयी बीमारियां एवं उनका महंगा इलाज एवं महंगी दवाइयां बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। इसलिये जेनेरिक दवाओं पर भरोसा और दुनिया में इसकी मांग, दोनों में इज़ाफ़ा हुआ है। मोदी सरकार ने जेनेरिक दवाओं को ज्यादा स्वीकार्य बनाने एवं सर्वसुलभ कराकर एक अभिनव स्वास्थ्य क्रांति का सूत्रपात किया है।

जेनेरिक दवाएं, जो ब्रांडेड दवाओं का सस्ता विकल्प होती हैं, वही सक्रिय तत्व (एक्टिव इंग्रेडिएंट) रखती हैं और उतनी ही प्रभावी होती हैं। फिर भी, इनका उपयोग भारत में अपेक्षाकृत कम है, क्योंकि डॉक्टरों पर कोई बाध्यकारी कानून नहीं है। हालांकि, भारतीय मेडिकल काउंसिल ने डॉक्टरों को जेनेरिक दवाएं लिखने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं, लेकिन ये बाध्यकारी नहीं, एक स्वैच्छिक संहिता है, जिसका पालन डाक्टर अपनी मर्जी से करते हैं। कोर्ट ने दवा कंपनियों की अनैतिक मार्केटिंग पर तत्काल रोक लगाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने की आवश्यकता पर बल दिया। कोर्ट की यह टिप्पणी स्वास्थ्य क्षेत्र की दिशा में एक अहम कदम हो सकता है। यहीं नहीं, आम जनता को सस्ती और सुलभ दवाओं का भी मार्ग प्रशस्त हो सकता है। भारत में दवा उद्योग एक विशाल और जटिल क्षेत्र है, जहां दवा कंपनियां अक्सर अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिए अनैतिक तरीकों का सहारा लेती हैं। ये कंपनियां डॉक्टरों को मुफ्त उपहार, विदेश यात्राएं, महंगे रात्रिभोज और अन्य प्रलोभन देकर अपनी ब्रांडेड दवाओं को प्रचारित करने के लिए प्रेरित करती हैं। नतीजतन, डॉक्टर कई बार मरीजों को ऐसी दवाएं लिखते हैं, जो न केवल महंगी होती हैं, बल्कि कई बार अनावश्यक भी होती हैं। इसका सीधा असर मरीजों की जेब और स्वास्थ्य पर पड़ता है।

सस्ती जेनेरिक दवाओं के प्रचलन को बाधिक करने की रणनीति एक वैश्विक समस्या है। भारत में जेनेरिक दवाओं की शुरूआत मोदी सरकार ने की। वैसे 2004 और 2013 के बीच अमेरिकी स्वास्थ्य प्रणाली को इससे लगभग 1.5 ट्रिलियन डॉलर की बचत हुई है। जेनेरिक कैंसर जैसी अनेक असाध्य बीमारियों की दवाओं की समय पर उपलब्धता ने ऐसे कई रोगियों की सामर्थ्य को बढ़ा दिया है। जबकि इसके विपरीत अनेक परिजनों के गंभीर व असाध्य रोगों की महंगी दवाओं एवं इलाज की वजह से लाखों लोग गरीबी की दलदल में डूब गए। कोरोना संकट के दौरान भी लोगों द्वारा घर, जमीन व जेवर बेचकर अपनों की जान बचाने की कोशिश की खबरें मीडिया में तैरती रही। लेकिन सामान्य दिनों में दवा कंपनियों की मिलीभगत व दबाव में लिखी जाने वाली महंगी दवाइयां भी गरीबों के लिये बड़ी समस्या बनती रही हैं। इसके बावजूद कि बाजार में उसी साल्ट वाली गुणवत्ता की जेनेरिक दवा सहज उपलब्ध है। कुछ समय पहले केंद्र सरकार की ओर से जेनेरिक दवाइयां लिखने की अनिवार्यता के निर्देश का अच्छा-खासा विरोध हुआ, जिसके चलते निर्णय वापस लेना पड़ा था। अब इसी चिंता को देश की शीर्ष अदालत ने अभिव्यक्त किया है, जो गरीबों को सस्ती दवाओं से इलाज का रास्ता सुगम बना देगी। जिससे गरीबों के जीवन में एक स्वास्थ्य उजाला होगा।

विडम्बना एवं दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि दवा-कम्पनियां तरह-तरह के प्रलोभन व परोक्ष-अपरोक्ष लाभ देकर चिकित्सकों पर महंगी दवा लिखने का दबाव बनाती हैं, मानो सारे नैतिक मूल्यों को ताक पर रखकर धनार्जन ही एकमात्र कर्म रह गया है। जिसकी कीमत उन लोगों को चुकानी पड़ती है, जो महंगी दवा खरीदने में सक्षम नहीं होते। ऐसे में वे कर्ज लेकर या अपने रिश्तेदारों से मदद लेकर किसी तरह गंभीर रोगों से ग्रस्त मरीजों का इलाज कराते हैं। इस खर्च के दबाव के चलते परिजनों को भी तमाम कष्ट उठाने पड़ते हैं। गाहे-बगाहे सरकारों ने दवा कंपनियों की बेलगाम मुनाफाखोरी रोकने को कदम उठाने की घोषणाएं तो कीं, लेकिन दवा माफिया के दबाव में समस्या का सार्थक समाधान नहीं निकल पाया। डॉक्टरों की तरफ से भी यदि इस दिशा में सहयोग मिलने लगे तो इस समस्या का समाधान किसी सीमा तक संभव हो सकता है। लेकिन विडंबना है कि ऐसा हो नहीं पा रहा है। एक संकट यह भी है कि दवा कंपनियों द्वारा प्रचार किया जाता है कि जेनेरिक दवाइयां रोग के उपचार में पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं होती, यह बात आम जनता में गहरे से बिठायी हुई है।

दवा कंपनियों की अनैतिक प्रथाएं केवल आर्थिक शोषण तक सीमित नहीं हैं, ये मरीजों के स्वास्थ्य और जान को भी खतरे में डालती हैं। महंगी दवाओं के प्रचार के कारण कई बार गरीब मरीज इलाज से वंचित रह जाते हैं। यदि जेनेरिक दवाओं को अनिवार्य किया जाए, तो न केवल दवाओं की कीमतें कम होंगी, बल्कि स्वास्थ्य सेवाएं भी अधिक समावेशी और सुलभ बनेंगी। निस्संदेह, सरकारों को इस दिशा में गंभीरता से सोचना होगा कि जेनेरिक दवाइयों को प्रोत्साहन देने के उसके प्रयास क्यों सिरे नहीं चढ़ते। एक वजह यह भी है कि दवा कंपनियों की लॉबी खासी ताकतवर होती है और साम-दाम-दंड-भेद की नीति का उपयोग करके अपने उत्पादों का विपणन करने में सफल हो जाती है। निस्संदेह, लंबे उपचार व असाध्य रोगों के इलाज में दवाओं की कीमत एक प्रमुख घटक होता है। यदि दवा नियंत्रित दामों में मिल सके तो उनकी बड़ी चिंता खत्म हो सकती है। निस्संदेह, दवाओं की कीमत हमारी चिकित्सा सेवाओं के लिये एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

सरकार को चाहिए कि गांव से लेकर शहरों तक जेनेरिक दवाओं के मेडिकल स्टोर बड़ी संख्या में खोले जाएं। गरीब-अनपढ़ मरीजों को जागरूक करके जेनेरिक दवाइयों के उपयोग को प्रोत्साहित करना होगा। मरीजों के परिजनों को विश्वास दिलाया जाना चाहिए कि जेनेरिक दवाइयां भी उसी साल्ट से बनी होती हैं, जिससे महंगी ब्रांडेड दवाइयां बनी होती हैं।

भारत ने आर्थिक प्रगति के बल पर आतंकवादी ठिकानों को किया नेस्तनाबूद

भारत ने अंतत: पाकिस्तान के कई आतंकवादी ठिकानों को नेस्तनाबूद कर ही दिया। भारत के इस कठोर कदम से भारतीय नागरिकों को संतुष्टि मिली है, विशेष रूप से उन परिवारों को जिन्होंने हाल ही में कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों के हमले में अपने सगे सम्बन्धियों को खोया है। विश्व के लगभग समस्त देशों ने भारत के इस कदम का समर्थन ही किया है क्योंकि आतंकवादियों से अपने देश के नागरिकों की रक्षा करना किसी भी देश की सरकार का प्रथम कर्तव्य है। भारत को पाकिस्तान स्थित आतंकवादी ठिकानों पर हमले करने का साहस कहां से मिलता है। यह मिलता है भारतीय नागरिकों की एकजुटता से, वर्तमान केंद्र सरकार पर देश के नागरिकों का भरपूर विश्वास है एवं वह यह सोचती है सही समय पर एवं सही स्थान पर भारतीय सेना आतंकवादियों पर हमला करके अपने नागरिकों के मारे जाने का बदला जरूर लेगी। दूसरे, संभवत: भारत की लगातार मजबूत हो रही आर्थिक स्थिति से भी केंद्र सरकार को कठोर निर्णय लेने का बल मिलता है। इस संदर्भ में, हाल ही में अच्छी खबर यह आई है कि भारत जापान की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए विश्व की चोथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है एवं संभवत: वर्ष 2026 के अंत तक जर्मनी की अर्थव्यवस्था को भी पीछे छोड़ते हुए भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। भारतीय अर्थव्यवस्था आज भी विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी हुई है। विश्व के लगभग समस्त वित्तीय संस्थान भारत के संदर्भ में यह भविष्यवाणी करते हुए दिखाई दे रहे है कि आगे आने वाले कई दशकों तक भारत इसी प्रकार विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना रहेगा।

भारत ने पिछले 10/11 वर्षों के दौरान वित्तीय क्षेत्र में कई सुधार कार्यक्रमों को लागू किया है। जिसका परिणाम स्पष्ट रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था पर दिखाई देने लगा है। माह अप्रेल 2025 में वस्तु एवं सेवा कर संग्रहण नित नई ऊंचाईयां छूते हुए 2.37 लाख करोड़ रुपए के उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गया है। यह सब देश के नागरिकों द्वारा अप्रत्यक्ष करों के नियमों का अनुपालन करने के चलते सम्भव हो पा रहा है। अप्रेल 2025 माह में ही फैक्ट्री उत्पादन के मामले में पिछले 10 माह के उच्चत्तम स्तर को पार किया गया है। आज अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रुपए की कीमत अमेरिकी डॉलर की तुलना में तेजी से बढ़ती जा रही है और यह अपने पिहले 7 माह के उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गई है। और तो और, सरकारी उपक्रमों एवं निजी कम्पनियों की लाभप्रदता में भी भारी सुधार देखने में आ रहा है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान भारतीय स्टेट बैंक ने 70,901 करोड़ रुपए का लाभ अर्जित किया है। इसी प्रकार, रिलायंस इंडस्ट्रीज ने 69,621 करोड़ रुपए, एचडीएफसी बैंक ने 64,062 करोड़ रुपए, ओएनजीसी ने 49,221 करोड़ रुपए, टाटा कंसल्टैसी सर्विसेज लिमिटेड ने 45,908 करोड़ रुपए, आईसीआईसीआई बैंक ने 44,256 करोड़ रुपए, इंडियन आइल कॉर्पोरेशन ने 41,729 करोड़ रुपए, लाइफ इन्शुरन्स कॉर्पोरेशन ने 40,915 करोड़ रुपए, कोल इंडिया लिमिटेड ने 37,402 करोड़ रुपए एवं टाटा मोटर्स लिमिटेड ने 31,399 करोड़ रुपए का लाभ अर्जित किया है। आपको ध्यान में होगा कि आज से कुछ वर्ष पर तक केंद्र सरकार को कई सरकारी उपक्रमों को चलायमान बनाए रखने के लिए लाखों करोड़ रुपए की सहायता केंद्रीय बजट के माध्यम से इन सरकारी

उपक्रमों की करनी होती थी। आज स्थित एकदम बदल गई है एवं आज ये लगभग समस्त उपक्रम केंद्र सरकार के लिए कमाऊ पूत की भूमिका निभाते हुए नजर आ रहे हैं एवं करोड़ों रुपए का लाभांश केंद्र सरकार को उपलब्ध करा रहे हैं। यह सब केंद्र सरकार द्वारा इन उपक्रमों में सुधार कार्यक्रमों को लागू करने के चलते ही सम्भव हो सका है। वर्ष 1991 में विदेशी मुद्रा भंडार के मामले में भारत भयावह स्थिति में पहुंच गया था तथा उस समय भारत के पास केवल 15 दिवस के आयात के बराबर ही विदेशी मुद्रा भंडार बच गया था और भारत को अपने स्वर्ण भंडार को ब्रिटेन के बैंकों में गिरवी रखकर विदेशी मुद्रा भंडार की व्यवस्था करनी पड़ी थी। आज स्थिति इस ठीक विपरीत है आज भारत के पास लगभग एक वर्ष के आयात के बराबर की राशि का विदेशी मुद्रा भंडार मौजूद है और यह 68,813 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर के ऊपर निकल गया है जो भारत के इतिहास में आज तक के उच्चत्तम स्तर के बहुत करीब है। इसी प्रकार वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत से विभिन्न उत्पादों एवं सेवा क्षेत्र के निर्यात अपने उच्चत्तम स्तर 82,490 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गए हैं। जिसके चलते भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में अतुलनीय सुधार होता हुआ दिखाई दे रहा है।

भारत से विभिन्न देशों को निर्यात में अभी और सुधार होता हुआ दिखाई देगा क्योंकि भारत ने हाल ही में ब्रिटेन के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते को अंतिम रूप दिया है इससे भारत के सेवा क्षेत्र को अत्यधिक प्रोत्साहन मिलने जा रहा है और ब्रिटेन में भारतीय इंजिनीयर एवं डाक्टर के साथ ही अन्य क्षेत्रों में कार्य करने के लिए भारतीयों की मांग में वृद्धि दृष्टिगोचर होगी। अमेरिका के साथ भी भारत का द्विपक्षीय व्यापार समझौता अपने अंतिम चरण में पहुंच गया है और यूरोपीयन यूनियन देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौता दिसम्बर 2025 तक सम्पन्न होने की प्रबल सम्भावना है। इसके बाद भारत से विकसित देशों को निर्यात निश्चित रूप से बढ़ेंगे और इसके चलते बहुत सम्भव है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारत के निर्यात अपने उच्चत्तम स्तर अर्थात एक लाख करोड़ अमेरिको डॉलर के स्तर को भी पार कर जाएं। यदि ऐसा होता है तो भारत में विदेशी मुद्रा भंडार भी एक लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर सकते हैं क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें भी कम होती हुई अर्थात लगभग 60 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर स्थिर होती हुई दिखाई दे रही हैं जबकि भारत अपने उपयोग का 80 प्रतिशत से अधिक कच्चे तेल का आयात विभिन्न देशों से करता है। साथ ही, भारत को स्वर्ण के आयात को भी नियंत्रण में रखना होगा। इससे, भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में अमेरिकी डॉलर की तुलना में और अधिक मजबूत होगी।

कलेक्टर ने किया प्रशिक्षण का निरीक्षण, नवाचार से जुड़े आजीविका मिशन को दी नई सौगात

महिला सशक्तिकरण की दिशा में मनेन्द्रगढ़ में नई पहल, रुई बाती निर्माण की 5 मशीनें प्रदाय

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (एनआईएफ) एवं जिला प्रशासन की संयुक्त पहल से महिलाओं की आजीविका संवर्धन हेतु एक सराहनीय कदम उठाया गया है। सोनहा बिहान आजीविका महिला संकुल संगठन, चैनपुर को रुई बाती निर्माण की पांच मशीनें प्रदाय की गई हैं, जो महिला स्व-सहायता समूहों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। इस नवाचार के सफल क्रियान्वयन हेतु 8 एवं 9 मई को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन संकुल भवन में किया गया, जिसमें गुजरात से पधारे राष्ट्रपति सम्मानित आविष्कारक श्री दीपक भाई पटेल द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

श्री पटेल ही इस मशीन के आविष्कारक हैं, जिन्होंने अपनी तकनीकी विशेषज्ञता के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को मशीन संचालन की बारीकियाँ समझाई। प्रशिक्षण एवं मशीन स्थापना की निगरानी एनआईएफ के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नितिन मौर्य एवं वैज्ञानिक डॉ. राहुल प्रकाश की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। प्रशिक्षण के दौरान कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने स्थल का औचक निरीक्षण कर कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने आगामी छह माह के भीतर मशीन की उपयोगिता, उत्पादन क्षमता एवं प्रभाव पर आधारित अध्ययन प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश जिला कार्यक्रम प्रबंधक, एनआरएलएम को दिए। उन्होंने इस अभिनव पहल के लिए एनआईएफ की टीम एवं आविष्कारक श्री पटेल को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि ऐसे नवाचार ग्रामीण आजीविका में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। उल्लेखनीय है कि यह मशीनें 20 दीदियों के एक समूह द्वारा सामूहिक रूप से संचालित की जाएंगी, जिससे न केवल उन्हें आय का एक स्थायी स्रोत प्राप्त होगा, बल्कि यह पहल अन्य महिला समूहों के लिए भी प्रेरणास्रोत बनेगी।

संबंध बनाने से मना किया तो पत्नी को मार डाला

बलरामपुर में पति ने लात-घूंसों से पीटा, फिर पत्थर से कुचला

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। बलरामपुर जिले के सेरेंगा जोभी में 24 वर्षीय युवक ने संबंध बनाने से इनकार करने पर पत्नी की पत्थर से मार-मारकर हत्या कर दी। सिर और सीने में गंभीर चोटें आने के कारण महिला की मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। घटना कुसमी थाना क्षेत्र की है।

जानकारी के मुताबिक, ग्राम सेरेंगा जोभी निवासी बबुआ पहाड़ी कोरवा (24 वर्ष) का 07 मई की रात 11.30 बजे पत्नी ढिलो बाई कोरवा से विवाद हो गया। ढिलो बाई ने पति के साथ शारीरिक संबंध बनाने से इनकार कर दिया तो विवाद करते हुए बबुआ कोरवा ने मुक्के, लात और पत्थर से उसके सीने ओर सिर में गंभीर चोटें आईं।

घटना की सूचना पर ढिलो बाई के शव को पोस्टमॉर्टम करा परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने मामले में धारा 103 (1) बीएनएस का अपराध दर्ज किया। घटना के बाद आरोपी फरार हो गया था। पुलिस ने आरोपी बबुआ पहाड़ी कोरवा को हिरासत में लेकर पूछताछ की। आरोपी ने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया।

परिजनों के अनुसार पति-पत्नी के बीच पहले भी विवाद होता था। बबुआ कोरवा और ढिलो बाई का विवाह करीब चार वर्ष पूर्व हुआ था। दोनों के दो बच्चे हैं। बुधवार को बबुआ कोरवा के माता-पिता और परिवार के सदस्य मेहमानी करने बाहर गए थे। शाम को पति-पत्नी ने साथ में हड़िया शराब पी थी। रात में शारीरिक संबंध बनाने से ढिलो बाई ने मना किया तो दोनों के बीच विवाद हुआ।

विवाद की जानकारी बबुआ के ससुर मधु कोरवा को मिली तो वह रात में अपने भाई साधो के साथ मौके पर पहुंचा। बबुआ कोरवा दोनों से उलझ गया। दोनों ने पति-पत्नी को नहीं लड़ने की समझाइश दी और वापस चले। रात में विवाद होने पर बबुआ ने पत्नी को मार डाला।

कुसमी थाना प्रभारी ललित यादव ने बताया कि आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया।

मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले की बेटियों ने रचा इतिहास

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने बुधवार को कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम घोषित किए। इस वर्ष मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले की छात्राओं ने उल्लेखनीय प्रदर्शन कर राज्य स्तर पर जिले का नाम रोशन किया। विजय नर्सरी इंग्लिश हायर सेकेंडरी स्कूल, मनेन्द्रगढ़ की छात्रा श्रुति मंगतानी, पुत्री श्री राकेश मंगतानी ने 97.40% अंक प्राप्त कर राज्य मेरिट सूची में द्वितीय स्थान हासिल किया। वहीं, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जनकपुर की छात्रा वंदना सिंह, पुत्री श्री रामपाल सिंह ने 97.67% अंकों के साथ राज्य मेरिट सूची में दसवां स्थान प्राप्त किया। जिले का समग्र परीक्षा परिणाम भी सराहनीय रहा। कक्षा 10वीं में 80 प्रतिशत और कक्षा 12वीं में 68 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त की। जिले के कलेक्टर डी. राहुल वेंकट एवं जिला शिक्षा अधिकारी अजय मिश्रा ने दोनों छात्राओं को उनकी उपलब्धि पर बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय पर्यटन समिति गठित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट की अध्यक्षता में जिला स्तरीय पर्यटन समिति का गठन किया गया। जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए समिति में अध्यक्ष, सचिव एवं सदस्यों की नियुक्ति निम्नानुसार किया गया है। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट अध्यक्ष, माननीय विधायक भरतपुर सोनहत विधानसभा क्र. 01 सदस्य, माननीय विधायक मनेंद्रगढ़ विधानसभा क्र. 02 सदस्य, पुलिस अधीक्षक सदस्य, वनमंडलाधिकारी सदस्य, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सचिव, डिप्टी कलेक्टर प्रभारी अधिकारी पर्यटन/पुरातत्व विभाग का सदस्य, महापौर नगर निगम चिरमिरी सदस्य, अध्यक्ष नगर पालिका मनेंद्रगढ़ सदस्य, सरपंच ग्राम पंचायत अमृत धारा का सदस्य, सरपंच ग्राम पंचायत हरचौका का सदस्य, सरपंच ग्राम पंचायत बेनीपुरा का सदस्य, डॉ. विनोद कुमार पाण्डेय, जिला नोडल अधिकारी, पुरातत्व/पर्यटन/संस्कृति विभाग एमसीबी को सदस्य/समन्वयक, आयुक्त नगर पालिक निगम चिरमिरी सदस्य, मुख्य नगर पालिका अधिकारी सदस्य, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग सदस्य, क्रेडा अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण जिला अधिकारी सदस्य, कार्यपालन अभियंता, जल संसाधन विभाग सदस्य, श्री गौरव त्रिपाठी शिक्षक बुंदेली को सदस्य, छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड के प्रतिनिधि पर्यटन अधिकारी क्षेत्रिय कार्यालय अंबिकापुर को सदस्य बनाया गया है । इस समिति का मुख्य उद्देश्य समिति के अध्यक्ष, सचिव तथा सदस्यों को समन्वय स्थापित कर जिले को पर्यटन के क्षेत्र में विकसित करते हुये बढ़ावा देना है।

हाई-सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगवाने पब्लिक परेशान

रायपुर में एक सेंटर में बेसमेंट में चल रहा काम लोग बोले-सांस लेने में परेशानी, पानी तक नहीं

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगाने के लिए लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। घंटों इंतजार के बाद भी लोगों के काम समय पर नहीं हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ परिवहन विभाग रायपुर जिले में 4 अगल-अलग सेंटर बनाए है। जहां पुराने नंबर प्लेट बदलकर नए नंबर प्लेट लगाने का काम चल रहा है।

इनमें से एक सेंटर वीआईपी चौक स्थित निजी कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स के लोअर बेसमेंट में बनाया गया है। लोअर बेसमेंट के चलते लोगों को गर्मी के मौसम में सांस लेने में भी परेशानी हो रही है। लोगों ने बताया कि वे सुबह से आए हैं, लेकिन दोपहर तक उनका नंबर नहीं आया है। पानी तक की सुविधा नहीं है।

प्रदेश में परिवहन विभाग की ओर से हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगाने का काम प्राइवेट कंपनियों को सौंपा गया है। लोगों की शिकायत है कि नंबर प्लेट लगाने में कंपनियों की ओर से देरी की जा रही है। 500 से 600 की संख्या में लोग नंबर प्लेट लगाने आ रहे हैं।

कंपनी के पास इतने स्टाफ नहीं है, जो जल्दी से काम करे। लोगों ने बताया कि हम कंपनी के लोगों को नंबर प्लेट खुद लगवाने कह रहे हैं तो भी इसे हैंडओवर नहीं किया जा रहा है। कहते हैं कि नंबर प्लेट खुद लगाकर देंगे।

वीआईपी चौक स्थित बेबीलॉन टावर के लोअर ग्राउंड फ्लोर में एक कंपनी वीआईपी नंबर प्लेट लगा रही है। लोगों ने बताया कि वहां न तो पानी की सुविधा है, न ही वॉशरूम की सुविधा है। बड़ी संख्या में महिलाएं भी नया नंबर प्लेट लगवाने आ रही हैं, लेकिन यहां लोगों के लिए कोई सुविधा नहीं है।

समय को लेकर नई व्यवस्था बनाने के लिए कंपनी को कहा गया है। इसमें एप्लिकेशन के बाद नंबर प्लेट कंपनी के पास आता है। ऐसे में हमने कहा है कि, एक दिन में कितने प्लेट लगाए जा सकते हैं इसे कंपनी सुनिश्चित करे। साथ ही कंट्रोल रूम के जरिए फोन कर लोगों को बुलाए और एक घंटे में प्लेट लगा दे।

छत्तीसगढ़ में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगाने की प्रक्रिया काफी धीमी है। राज्य सरकार ने 1 अप्रैल 2019 से पहले पंजीकृत लगभग 50 लाख पुराने वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट अनिवार्य रूप से लगाने का निर्णय लिया है। जिले में केवल 20 फीसदी वाहनों में ही नंबर प्लेट लग पाई हैं।

शंकराचार्य बोले- सेना के विजय के लिए धार्मिक अनुष्ठान करेंगे

रायपुर में कांग्रेस की तिरंगा यात्रा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। भारतीय सेना के 'ऑपरेशन सिंदूर' में पाकिस्तान के खिलाफ की गई सैन्य कार्रवाई के बाद पूरे देश में शौर्य और राष्ट्रभक्ति की लहर है। राजधानी रायपुर में कांग्रेस ने तिरंगा यात्रा निकाली।कालीबाड़ी में इंदिरा गांधी की प्रतिमा पर फूल चढ़ाकर कार्यकर्ताओं ने यात्रा शुरू की।

पीसीसी चीफ दीपक बैज के नेतृत्व में निकली यात्रा कोतवाली चौक, मालवीय रोड होते हुए जयस्तंभ चौक तक पहुंची। बैज ने कहा कि ये यात्रा आतंकवाद के खिलाफ है। तिरंगा देश की शान है। ये यात्रा हमने इसलिए निकाली है ताकि हमारी सेना का मनोबल बढ़े।

वहीं, ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद का भी बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि सभी संत समाज देश के साथ है। सभी संत सेना के विजय के लिए धार्मिक अनुष्ठान करेंगे, अगले दो महीनों तक के सभी कार्यक्रम निरस्त कर दिए हैं।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि यह समय देश के साथ एकजुट होकर खड़े होने का है। देश का पराक्रम शत्रुओं का नाश करेगा। उन्होंने प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री और गृहमंत्री के साथ साथ भारतीय सेना के कार्यों की प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि वे भारत की विजय के लिए धार्मिक अनुष्ठान भी सम्पन्न कराएंगे। वे स्वयं को युद्ध के लिए और सैन्य शिविर में सेवा कार्यों के लिए भी प्रस्तुत करते हैं।

यह सैन्य कार्रवाई 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में की गई थी, जिसमें 26 भारतीय पर्यटकों की मौत हुई थी। इसके बाद भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान-ऑक्युपाइड कश्मीर में स्थित 9 आतंकी ठिकानों पर ड्रोन और मिसाइल से हमला किया। इस ऑपरेशन में कई आतंकी कैंप तबाह कर दिए गए, जिसे भारत ने दुश्मनों को सीधी चेतावनी के रूप में देखा।

प्रधानमंत्री आवास योजना की प्रगति को लेकर किया गया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार एवं जिला पंचायत सीईओ अंकिता सोम के मार्गदर्शन में मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिला के जनपद पंचायत मनेंद्रगढ़ के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, कार्यक्रम अधिकारी एवं तकनीकी सहायक द्वारा विगत 07 एवं 08 मई को ग्राम पंचायत उजियारपुर, सोनवर्षा सेमरा, सरभोका, मनवारी एवं केल्हारी का दौरा किया गया। इस दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत लाभान्वित हितग्राहियों से सीधे मुलाकात की गई तथा आवास निर्माण की प्रगति की जानकारी ली गई। अधिकारियों ने अप्रारंभ, प्रगतिरत एवं पूर्ण आवासों का स्थलीय निरीक्षण कर हितग्राहियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। हितग्राहियों को आवास कार्य में तेजी लाने हेतु प्रेरित किया गया और उन्हें समय-सीमा के भीतर निर्माण पूर्ण करने के निर्देश दिए गए।

इसके साथ ही वर्तमान में संचालित आवास प्लस 2.0 सर्वे के अंतर्गत ग्राम पंचायतों में चल रहे सर्वे कार्य की भी समीक्षा की गई। अधिकारियों ने स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी पात्र हितग्राही को वंचित न रखा जाए और सभी पात्र लाभार्थियों का सर्वे समय पर सुनिश्चित किया जाए।

दिल्ली से 2 दिन में 138 उड़ानें कैंसिल

श्रीनगर/जयपुर/अमृतसर/अहमदाबाद (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान तनाव के बाद 8 राज्यों के 29 एयरपोर्ट्स को 10 मई तक बंद किया गया है। ये राज्य- जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश हैं। वहीं, पिछले दो दिन में दिल्ली एयरपोर्ट से 138 घरेलू और इंटरनेशनल फ्लाइट्स कैंसिल की गई हैं। इस बीच मुंबई एयर ट्रैफिक कंट्रोल पर दबाव बढ़ गया है। पाकिस्तान का एयरस्पेस बंद होने के चलते मुंबई एटीसी यूरोप, उत्तर और दक्षिण अमेरिका की फ्लाइट्स हैंडिल कर रहा है। इंडिगो एयरलाइंस ने 10 मई की रात 12 बजे तक श्रीनगर, जम्मू, अमृतसर, लेह, चंडीगढ़, धर्मशाला, बीकानेर, जोधपुर, किशनगढ़ और राजकोट की सभी फ्लाइट्स को रद्द कर दिया है। श्रीनगर एयरपोर्ट पर हाई अलर्ट है। सिविल एविएशन डिपार्टमेंट ने नई एडवाइजरी जारी की है। अब पैसेंजर्स को डबल सुरक्षा जांच से गुजरना होगा। इसको लेकर एअर इंडिया, अकासा, स्पाइसजेट और इंडिगो एयरलाइन ने भी 3 घंटे तक पहले एयरपोर्ट पहुंचने को कहा है।

अमेजन-फ्लिपकार्ट समेत 13 ई-कॉमर्स कंपनियों पर सीसीपीए का एक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान जंग के हालात के बीच सेंट्रल कंज्यूमर प्रोटेक्शन अथॉरिटी ने अमेजन-फ्लिपकार्ट जैसी 13 ई-कॉमर्स कंपनियों को अपने प्लेटफॉर्म पर वॉकी-टॉकी डिवाइस की अवैध बिक्री के लिए नोटिस जारी किए हैं। सीसीपीए ने शुक्रवार (9 मई) को ऑफिशियल स्टेटमेंट में इस बात की जानकारी दी। सीसीपीए ने कहा कि ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर वॉकी-टॉकी की अवैध लिस्टिंग और बिक्री के खिलाफ प्रमुख डिजिटल मार्केटप्लेस को 13 नोटिस जारी किए हैं। ये प्लेटफॉर्म अमेजन, फ्लिपकार्ट, मीशो, ओएलएक्स, ट्रेड इंडिया, फेसबुक, इंडियामार्ट, वरदानमार्ट, जियोमार्ट, कृष्णामार्ट, चिमिया, टॉक प्रो वॉकी टॉकी और मास्क मैन टॉय है। यह कार्रवाई प्रॉपर फ्रीक्वेंसी डिस्क्लोजर, लाइसेंसिंग इंफॉर्मेशन और इक्विपमेंट टाइप अप्रूवल के बिना वॉकी-टॉकी की सेल पर फोकस है, जो कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट-2019 का उल्लंघन है। इससे पहले यूनियन फूड एंड कंज्यूमर मिनिस्टर प्रल्हाद जोशी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, नॉन-कंप्लायंस यानी गैर-अनुपालन वाले वायरलेस डिवाइसेज की सेल न केवल स्टेट्यूटरी ऑब्लिगेशन यानी वैधानिक दायित्वों का उल्लंघन करती है। बल्कि, नेशनल सिक्योरिटी ऑपरेशंस के लिए जोखिम भी पैदा कर सकती है।%

राजस्थान के जैसलमेर-बाड़मेर में 5 बजते ही बाजार बंद

जयपुर/जैसलमेर/बाड़मेर (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर, श्रीगंगानगर, बीकानेर और फलोदी जिलों में हाई अलर्ट है। जैसलमेर और बाड़मेर में शाम 5 बजते ही बाजार बंद हो गए। यहां शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे तक पूरी तरह ब्लैकआउट रहेगा। श्रीगंगानगर और फलोदी में शाम 7 बजे से सुबह 6 बजे तक ब्लैकआउट रहेगा। जैसलमेर में सभी सार्वजनिक कार्यक्रमों पर रोक लगा दी गई है।

मुयमंत्री ने किया 3 दिवसीय राज्य स्तरीय आदि शिल्पग्राम महोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश के जनजातीय कला और कलाकारों ने देश-विदेश में अपनी पहचान बनाई है। जनजातीय समृद्ध कला विरासत और इसके कलाकारों को मां सरस्वती का आशीष प्राप्त है। जनजातीय कलाकारों की कल्पनाशीलता प्रशंसनीय है। एक सधे और गढ़े हुए हाथों से बारीक चित्रकारी कर जनजातीय कलाकारों ने पूरी दुनिया को अपना हुनर दिखाया है। हमारी सरकार सभी जनजातीय कलाओं के संरक्षण और कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए हर जरूरी कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को रवीन्द्र भवन में 3 दिवसीय राज्य स्तरीय आदि शिल्पग्राम महोत्सव के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि हमारी सरकार विरासत से विकास की ओर बढ़ने के संकल्प के अनुरूप सभी प्राचीन कला, संस्कृति, परंपराओं और इनके कलाकारों को संरक्षण दे रही है। गोंड चित्रकला को जीआई टेग प्राप्त हो चुका है, जो इस चित्रकला और इससे संबंधित चित्रकारों को वैश्विक सम्मान मिलने का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार सभी प्रकार की जनजातीय शिल्प, चित्रकारी और कलाकारों को उनकी कला प्रदर्शन एवं बाजार उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न आयोजनों के जरिए समुचित मंच प्रदान करने का प्रयास कर रही है। हमने केंद्र सरकार के साथ मिलकर प्रदेश के संपूर्ण जनजातीय वर्ग को विकास मुख्य धारा से जोड़ने के लिए

कई कल्याणकारी योजनाएं और विकास कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। इन योजनाओं को जमीन पर उतारने का काम तेजी से प्रगति पर है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनजातीय पराक्रम, शौर्य और बलिदान के प्रतीक राजा शंकर शाह, कुंवर रघुनाथ शाह और राजा हृदय शाह के मंडला स्थित प्राचीन किले के जीर्णोद्धार के लिए 15 करोड़ रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि जनजातीय समुदाय की महान विभूतियों को समूचित सम्मान मिले, इसके लिए राजधानी भोपाल में अत्याधुनिक रेलवे स्टेशन का नाम रानी कमलापति स्टेशन रखा गया है।

क्रांतिसूर्य टंट्या मामा के नाम से खरगौन में विश्वविद्यालय की शुरुआत भी की गई है।

कर्नल सोफिया बोलीं- पाकिस्तान नागरिकों को ढाल बना रहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार शाम 5.30 बजे पाकिस्तान के साथ तनाव पर लगातार तीसरे दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह मौजूद रहीं। इससे पहले 7 और 8 मई को भी सरकार की तरफ से ऑपरेशन सिंदूर की जानकारी दी गई थी। 8-9 मई की मध्य रात्रि को पाकिस्तानी सेना ने सैन्य बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने के इरादे से कई

बार हमला किया। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर 36 स्थानों पर घुसपैठ का प्रयास किया गया। करीब 300-400 ड्रोन का इस्तेमाल किया। इनका मकसद खुफिया और वायु रक्षा प्रणालियों की जानकारी लेना था। शुरुआती जांच में यह सामने आया कि तुर्किये के ड्रोन थे। इनकी जांच की जा रही है। भारतीय सेनाओं ने इन्हें नष्ट कर दिया। एक यूएवी भी मूवमेंट कर रही थी, जिसे निष्क्रिय कर दिया गया। पाकिस्तान ने एलओसी पर भारी फायरिंग की, इसमें कुछ जवान घायल हुए। 7 मई 2025 को रात साढ़े आठ बजे मिसाइल और ड्रोन हमला किया और उस दौरान अपना एयर स्पेस बंद नहीं किया। नागरिकों का इस्तेमाल ढाल के लिए किया।

6 राज्यों के 19 जिलों में स्कूल बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ रहे सैन्य तनाव को देखते हुए भारत के 6 राज्यों में स्कूल बंद करने के निर्देश जारी किए गए हैं। इन राज्यों में पाकिस्तान सीमा से सटे जम्मू, पंजाब और राजस्थान शामिल हैं। 7 और 8 मई की रात पाकिस्तान ने इन राज्यों में मिसाइल हमले का प्रयास किया था। इसी के चलते, सुरक्षा के मद्देनजर स्कूल बंद किए गए हैं। देश की राजधानी दिल्ली के कई प्राइवेट स्कूलों ने एहतियाती कदम उठाते हुए अपनी पढ़ाई ऑनलाइन मोड में शिफ्ट करने का फैसला किया है। इन स्कूलों में दिल्ली पब्लिक स्कूल वसंत

कुंज, इंद्रप्रस्थ वर्ल्ड स्कूल पश्चिम विहार और क्वीन मैरी स्कूल मॉडल टाउन शामिल हैं। जम्मू-कश्मीर में भी, बच्चों को एकेडमिक लॉस से बचाने के लिए स्कूलों ने पढ़ाई ऑनलाइन मोड में शिफ्ट करने का फैसला किया है। अगले आदेश तक जम्मू के सभी स्कूल ऑनलाइन चलेंगे। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया ने मई में होने वाली चार्टर्ड अकाउंटेंट फाइनल, इंटरमीडिएट और पोस्ट क्वालिफिकेशन कोर्स एग्जाम को पोस्टपोन कर दिया है।

ऑपरेशन सिंदूर पर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में जश्न

उत्तर प्रदेश (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद यूपी में आज पहला जुमा है। लखनऊ-वाराणसी, कानपुर समेत कई शहरों में नमाज के बाद मुस्लिम समुदाय के लोगों ने पाकिस्तान के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाए। कहा- हम भारत की सेना के साथ खड़े हैं। पाकिस्तान की इस कायराना हमले का विरोध करते हैं। उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाए। लखनऊ में मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने कहा- मुसलमान भारत के साथ खड़ा है। वहीं, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में छात्रों ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर मार्च निकाला। इसी बीच शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने अपने दो महीने के सभी कार्यक्रमों को निरस्त कर दिए हैं। मेरठ में उन्होंने कहा - जरूरत पड़ी तो सेना की मदद करने भी जाऊंगा। हम भारत की विजय के लिए धार्मिक अनुष्ठान भी सम्पन्न कराएंगे। इधर, पाकिस्तान को सिंधु जल संधि के मामले में वर्ल्ड बैंक से झटका लगा है। अध्यक्ष अजय बंगा ने साफ कर दिया कि वर्ल्ड बैंक इस विवाद में हस्तक्षेप नहीं करेगा। उन्होंने कहा- भारत और पाकिस्तान के बीच 1960में हुई इस संधि में वर्ल्ड बैंक की भूमिका केवल एक मध्यस्थ की है। हालिया गतिरोध को सुलझाने में बैंक कोई हिस्सा नहीं लेगा। पाकिस्तान-भारत के बीच तनाव को देखते हुए यूपी पुलिस हाई अलर्ट पर है।

आतंकी तहव्वुर राणा 6 जून तक न्यायिक हिरासत में

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के मुख्य साजिशकर्ता तहव्वुर राणा को शुक्रवार को एएनआई रिमांड से पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया गया। एएनआई की विशेष अदालत ने तहव्वुर को 6 जून न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया है। सुरक्षा कारणों के चलते राणा को निर्धारित तारीख से एक दिन पहले ही कोर्ट में पेश किया गया था। न्यायिक हिरासत में भेजे जाने के बाद राणा को तिहाड़ जेल ले जाया गया।

एएनआई ने तहव्वुर राणा को 10 अप्रैल को स्पेशल प्लेन से अमेरिका से भारत लेकर आई थी। 10 अप्रैल को उसे स्पेशल एएनआई जज चंद्रजीत सिंह ने उसे 18 दिन की कस्टडी में भेज दिया था। इसे दोबारा 12 दिन के लिए बढ़ा दिया गया था। 30 अप्रैल को कोर्ट ने एएनआई की मांग पर राणा की आवाज और लिखावट के सैंपल लेने की परमिशन दी थी। इससे पहले 28

अप्रैल को स्पेशल एएनआई जज चंदर जीत सिंह ने राणा को 12 दिन की कस्टडी में भेज दिया था। तहव्वुर को अमेरिका के शिकागो में अक्टूबर 2009 में अमेरिकी एजेंसी ने गिरफ्तार किया था। उस पर मुंबई के 26/11 और कोपेनहेगन में आतंकी हमले को अंजाम देने के लिए जरूरी सामान मुहैया कराने का आरोप था 3 मई तहव्वुर राणा की आवाज और हैंडराइटिंग के सैंपल लिए।

पठानकोट में सायरन बजते ही ब्लैकआउट

पंजाब (एजेंसी)। पंजाब में अंधेरा होते ही 6 बॉर्डर जिलों, अमृतसर, गुरदासपुर, पठानकोट, फिरोजपुर, फाजिल्का और तरनतारन में हाई अलर्ट किया गया है। यहां पाकिस्तान की तरफ से फिर ड्रोन अटैक को लेकर निगरानी की जा रही है। इसी बीच पठानकोट में सायरन बजा है। जिसके बाद पूरा शहर ब्लैकआउट हो गया है। इससे पहले कल भी भारत के %ऑपरेशन सिंदूर% एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान ने पंजाब में तीसरी बार हमला किया था। शुक्रवार सुबह 5 बजे भी पाकिस्तान की तरफ से अमृतसर में ड्रोन से अटैक किया गया। हालांकि भारतीय सेना के एयर डिफेंस सिस्टम स-400 ने खासा इलाके में 2 ड्रोन नष्ट कर डाले। इस बारे में विदेश मंत्रालय की कॉन्फ्रेंस में कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने बताया कि 8 से 9 मई की रात को पाकिस्तान ने बठिंडा आर्मी कैंट को निशाना बनाकर हमला किया हालांकि आर्मी ने उनके ड्रोन को पहले ही गिरा दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश को खारिज किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को दिल्ली हाईकोर्ट में न्यूज एजेंसी एनआई के खिलाफ लगी याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने दिल्ली एनआई को कहा- अदालत मीडिया को यह नहीं कह सकती कि यह हटाओ और वह हटाओ। कोर्ट ने कहा, %न्यायपालिका और मीडिया दोनों ही लोकतंत्र के स्तंभ हैं, जो संविधान की बुनियादी विशेषता है। लोकतंत्र के फलने-फूलने के लिए दोनों को एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए। दरअसल, मामला एनआई और विकिमीडिया फाउंडेशन के मानहानि केस से जुड़ा है। विकिमीडिया ने विकिपीडिया पर इस केस की जानकारी सार्वजनिक की थी। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि विकिपीडिया से यह जानकारी हटाई जाए। यह पूरा मामला तब शुरू हुआ जब न्यूज एजेंसी एनआई ने विकिपीडिया चलाने वाली संस्था विकिमीडिया फाउंडेशन के खिलाफ मानहानि का केस किया।

छत्तीसगढ़ समेत 16 राज्यों में आंधी-बारिश की चेतावनी

पहलगाम/नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने आज उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ समेत 16 राज्यों में आज आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है। राजस्थान और मध्यप्रदेश में ओले गिरने का अनुमान भी है। वहीं, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में हीटवेव की चेतावनी जारी की गई है। साथ ही नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों में भी बारिश का अनुमान है। दक्षिण भारत के राज्यों में कुछ ही जिलों में बारिश की संभावना है। जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में आज भी बादल रहेंगे और बरसात होगी। गुरुवार को मध्य प्रदेश के 7 जिलों में बरसात के चलते तापमान में गिरावट हुई। वहीं, राजस्थान के जयपुर, अलवर सहित कई शहरों में बारिश हुई । टोंक में ओले गिरे। वहीं, हरियाणा और पंजाब में मौसम सामान्य बना रहा। वेस्टर्न डिस्टरबेंस का पैटर्न बदलने से मौसम पर सबसे ज्यादा असर होने लगा है। हिमालय पर जनवरी-फरवरी में होने वाली बर्फबारी मार्च-अप्रैल में होने लगी है। दो साल से सबसे ज्यादा स्नोकवर मार्च में हो रहा है। इससे हीटवेव के दौर घट रहे हैं। यह जानकारी जलवायु परिवर्तन पर अध्ययन करने वाली संस्था क्लाइमेट ट्रेंड ने दी है। सर्दियों में पश्चिम से आने वाले तूफानों को वेस्टर्न डिस्टरबेंस कहते हैं। कुछ साल पहले तक नवंबर से फरवरी के बीच सबसे ज्यादा डिस्टरबेंस आते थे। हालांकि, चार-पांच सालों में इनकी सक्रियता जनवरी-फरवरी में कम होकर मार्च-अप्रैल में बढ़ गई है।

बढ़ते तनाव के बीच, उत्तर रेलवे ने जम्मू-उधमपुर से दिल्ली के लिए विशेष ट्रेनों का संचालन शुरू किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर रेलवे ने बढ़ती मांग को देखते हुए शुक्रवार को जम्मू और उधमपुर से नयी दिल्ली के लिए तीन विशेष ट्रेन शुरू की। उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु उपाध्याय ने कहा, 12 अनारक्षित और 12 आरक्षित डिब्बों वाली एक विशेष ट्रेन पूर्वाह्न करीब 10.45 बजे जम्मू से नयी दिल्ली के लिए रवाना हुई। दूसरी, 20 कोच वाली वंदे भारत ट्रेन अपराह्न 12:45 बजे उधमपुर से जम्मू और पठानकोट होते हुए नयी दिल्ली के लिए रवाना हुई। उन्होंने कहा, 22 कोच वाली तीसरी विशेष आरक्षित ट्रेन, शाम करीब सात बजे जम्मू से नयी दिल्ली के लिए निर्धारित की गई है। अधिकारियों के अनुसार, पाकिस्तान से लगे सीमावर्ती क्षेत्रों के करीब रहने वाले कई लोग सुरक्षित स्थानों पर जा रहे हैं, जिसके कारण ट्रेनों की मांग बढ़ गई है। उपाध्याय ने कहा, जम्मू, अंबाला, नयी दिल्ली जैसे विभिन्न स्थानों पर नियंत्रण कक्ष लगातार स्थितियों की निगरानी कर रहे हैं। हम आरक्षण पैटर्न और स्टेशनों पर यात्रियों की आवाजाही पर भी नजर रख रहे हैं, जिसके बाद हम विशेष ट्रेन शुरू करने का फ़ैसला कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हमने पहले ही पर्याप्त व्यवस्था कर ली है और हमारे पास आरक्षित ट्रेन हैं, जिन्हें ज़रूरत पड़ने पर तुरंत चला सकते हैं।

नेपाल में उठी शांति की आवाज

असम (एजेंसी)। नेपाली मानवाधिकार समूह ने शुक्रवार को यहां स्थित भारत और पाकिस्तान के दूतावासों के बाहर प्रदर्शन किया और दोनों देशों से दक्षिण एशिया में चल रहे तनाव को खत्म करने और शांति को बढ़ावा देने का आग्रह किया। मानवाधिकार और शांति सोसायटी ने कार्यकर्ता कृष्ण पहाड़ी और एचयूआरपीईएस के अध्यक्ष रेणुका पौडेल के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया। संगठन ने आतंकवाद और उग्रवाद की निंदा की और इस बात पर जोर दिया कि शांति ही इस क्षेत्र के लिए आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है।

प्रदर्शनकारियों ने हाथों में नारे लिखी तख्तियां ले रखी थीं जिन पर 'युद्ध में कोई नहीं जीतेगा, केवल मानवता हारेगी%, 'आतंकवाद हर समय निंदनीय है%, 'शांति से सभी की जीत होगी% और 'आइए, दक्षिण एशिया को युद्ध-मुक्त क्षेत्र बनाएं% जैसे नारे लिखे थे। कार्यकर्ताओं ने विशिष्ट मुद्दों पर भी चिंता जताई और नारे लगाते हुए सिंधु जल संधि के निलंबन और पहलगाम आतंकी हमले में शामिल लोगों को पाकिस्तान द्वारा संरक्षण दिए जाने पर सवाल उठाए।

'सिंधु जल समझौते को निलंबित करना कितना वैध है?, 'पहलगाम में पर्यटकों पर हमला

करने वालों को पाकिस्तान ने क्यों बचाया?% और 'आतंकवाद और उग्रवाद का शिकार पाकिस्तान, आतंकवाद को क्यों पनाह दे रहा है? जैसे अन्य नारे भी तख्तियों पर प्रदर्शित किये गए।

एचयूआरपीईएस ने एक विज्ञप्ति जारी कर कहा कि भारत सरकार को संबोधित एक ज्ञापन काठमांडू में भारतीय दूतावास के अधिकारियों को सौंपा गया, जबकि पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारियों द्वारा इसे स्वीकार करने से इनकार करने के बाद इसी तरह का समान पत्र ईमेल के माध्यम से पाकिस्तान सरकार को भेजा गया।

भारत-पाक तनाव पर एमपी में भी अलर्ट

इंदौर। भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध जैसे हालात के बीच मध्यप्रदेश में भी अलर्ट जारी किया गया है। इंदौर में बिना अनुमति सभी तरह के आयोजन बैन कर दिए गए हैं। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार ने गुरुवार को इसका आदेश जारी किया, जो 4 जुलाई 2025 तक लागू रहेगा। बैतूल में पुलिसकर्मियों की छुट्टियों पर रोक लगा दी गई है। अति आवश्यक स्थितियों में वरिष्ठ अधिकारियों की अनुमति से छुट्टी मिलेगी।

भोपाल में शुक्रवार सुबह लोगों ने बड़े तालाब किनारे बोट क्लब पर खड़े सुदर्शन चक्र टैंक पर चढ़कर तिरंगा फहराया। वंदे मातरम के नारे लगाए। उन्होंने कहा- अब समय आ गया है कि आतंकवाद को जड़ से खत्म किया जाए। भारत की सेना लगातार जवाब दे रही है। जल्द ही पाकिस्तान का नाम तक नहीं बचेगा।

इससे पहले ग्वालियर में प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट के निर्देश के बाद

कमिश्नर मनोज खत्री ने शहर के सभी 66 वार्डों की मैपिंग कर पर्याप्त सायरन लगवाने के निर्देश दिए हैं। कमिश्नर ने कहा- ऐसी व्यवस्था बनाएं, जिससे पूरे शहर को सचेत करने के लिए एक संकेत पर सभी सायरन बजें।

उधर, इंदौर ट्रक ऑपरेटर्स एंड ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर सेना के ट्रांसपोर्ट के लिए अपने ट्रक उपलब्ध कराने की पहल की है। एसोसिएशन ने इस संबंध में 8 मई को पत्र जारी किया है। संगठन के अध्यक्ष सीएल मुकाती का कहना है कि प्रदेश के साढ़े सात लाख ट्रक सेना के परिवहन के लिए तैयार हैं।

इंदौर पुलिस कमिश्नर संतोषकुमार सिंह ने भारतीय नागरिक संहिता की धारा 163 के तहत आदेश जारी किया है। आदेश का उल्लंघन करने वालों पर भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी।

पंजाब किंग्स में आने से बेहतर हुआ-अर्शदीप

नई दिल्ली (एजेंसी)। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने आईपीएल के इस सत्र में पंजाब की ओर से अच्छा प्रदर्शन किया है। अर्शदीप ने कहा है कि इस टीम में आने के बाद से ही उनमें काफी बदलाव आया है जिसके कारण ही वह पहले से बेहतर खिलाड़ी बन सके हैं। अर्शदीप ने कहा कि फ्रेंचाइजी में एक साल होने के बाद से ही उन्हें अहम भूमिका भी मिलने लगीं जिससे वह अधिक जिम्मेदारी से अपना काम कर पाते हैं। वह साल 2019 से ही पंजाब किंग्स से खेल रहे हैं। अर्शदीप ने कहा, जब से मैं पंजाब किंग्स में आया हूं, पहले साल को छोड़कर , मुझे अपनी भूमिका में वरिष्ठता महसूस होने लगी है। मैं पिछले सात सालों से इस टीम से जुड़ा हुआ हूं और टीम के साथ अपना पहला साल बिताने के बाद मुझे लगने लगा कि मुझे टीम में बहुत बड़ी जिम्मेदारी दी गई है।

इससे मुझे एक खिलाड़ी और बेहतर इंसान के रूप में विकसित होने में भी सहायता मिली। अर्शदीप का अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन आईपीएल सीजन 2021 में आया जब उन्होंने 12 मैचों में 18 विकेट लिए। वहीं उन्होंने 2022 में 10 विकेट लिए थे। अर्शदीप ने कहा कि इस लीग में खेलने से उन्हें पता चला कि अधिक दबाव वाले मैचों में किस प्रकार से खेला जाता है। इसके साथ ही उनका रुख भी खेल को लेकर गंभीर को गया क्योंकि कठिन हालातों में अगर रुख गंभीर नहीं होगा तो उसका नुकसान टीम को हो सकता है।

भारतीय कमेंटेटर्स पर बुरी तरह भड़के रोहित शर्मा

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया टेस्ट टीम के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा कई बार क्रिकेट पंडितों, पूर्व क्रिकेटर की आलोचना का शिकार हुआ हैं। अब एक इंटरव्यू में 38 साल के रोहित शर्मा ने बताया कि आधुनिक समय में किस तरह से मसाला ने शुद्ध क्रिकेट पर कब्जा कर लिया है। विमल कुमार से एक इंटरव्यू के दौरान रोहित ने बताया कि जिस तरह से भारत में कमेंट्री होती है और ऑस्ट्रेलिया में जिस तरह के कमेंट्री की जाती है उसमें कितना अंतर है। रोहित शर्मा ने कहा कि हम सब कुछ देखते हैं, हम एक-दूसरे से बात करते हैं। कभी-कभी जब हम टीवी पर मैच देख रहे होते हैं, तो कमेंटेटर जिस तरह की बातें करते हैं, वह ऑस्ट्रेलिया में देखी जाने वाली कमेंट्री से बहुत अलग होती है। ये बहुत निराशाजनक है और मैं बहुत ईमानदारी से कह रहा हूं। भारत में ऐसा लगता है कि वे सिर्फ एक खिलाड़ी को निशाना बनाना चाहते हैं और उसके बारे में बोलना चाहते हैं जो बहुत निराशाजनक है।

टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले चुके रोहित ने कहा कि खराब फॉर्म को लेकर किसी खिलाड़ी की आलोचना करना पूरी तरह से समझ में आता है। लेकिन कमेंटेटरों को पता होना चाहिए की उसकी सीमा कितनी होनी चाहिए। हिटमैन ने आगे कहा कि बहुत से लोग हैं जो खेल से प्यार करते हैं उन्हें मसाला नहीं चाहिए वे क्रिकेट देखना चाहते हैं। आज के समय में हम खेल में बहुत मसाला डालते हैं। ऐसे क्रिकेट प्रेमी भी हैं जो खेल के बारे में ज्यादा जानना चाहते हैं और समझना चाहते हैं कि किसी खिलाड़ी का फॉर्म खराब क्यों है। वे व्यक्तिगत बातें नहीं सुनना चाहते।

भारतीय टीम के नये टेस्ट कप्तान के लिए ये हैं प्रबल दावेदार

मुम्बई (एजेंसी)। रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास के बाद अब अगले माह होने वाले इंग्लैड दौरे के लिए भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) को नये कप्तान की तलाश है। भारतीय टीम को इंग्लैड दौरे में पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। ऐसे में इन चार खिलाड़ियों को कप्तानी का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। जसप्रीत बुमराह - तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह टेस्ट कप्तान बनने के सबसे बड़े दावेदार हैं। वह टीम के उपकप्तान भी हैं। उन्होंने कई अवसरों पर नेतृत्व कर प्रभावित किया है। बुमराह ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के पहले और आखिरी टेस्ट में भारत की कप्तानी की थी। उन्होंने पहले मैच में 72 रन देकर 8 विकेट लेकर भारत को 295 रनों से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी वह प्लेयर ऑफ द मैच ही रहे।हालांकि, बुमराह सिडनी में आखिरी टेस्ट में चोट लगने के कारण पूरा मैच नहीं खेल सके थे। बुमराह का कमजोर पक्ष उनकी फिटनेस है। केएल राहुल - विकेटकीपर बल्लेबजा के एल राहुल भी दावेदारों की सूची में हैं। वह तीन टेस्ट मैचों में भारत की कप्तानी कर चुके हैं। जिसमें से दो में जीत मिली। राहुल ने साल 2021-22 में दक्षिण अफ्रीका दौरे पर दूसरे टेस्ट के दौरान कोहली की जगह कप्तानी की थी।

आर्सेनल को हराकर पीएसजी चैंपियंस लीग के फाइनल में पहुंचा, इंटर मिलान से होगा खिताबी मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेरिस सेंट-जर्मेन यानी पीएसजी ने एक के बाद एक हमलों का डटकर सामना करते हुए आक्रामक अंदाज में खेल रहे आर्सेनल को सेमीफाइनल के दूसरे चरण में 2-1 से हराकर चैंपियंस लीग फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। खिताबी मुकाबले में उसका सामना इटैलियन क्लब इंटर मिलान से होगा। सेमीफाइनल के पहले चरण में 1-0 से जीत हासिल करने वाली पीएसजी की टीम को शुरू में गेंद पर कब्जा करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। लेकिन जवाबी हमलों और गोलकीपर जियमानलुईगी डोनारुम्मा के बेहतरीन प्रदर्शन से उसने 3-1 के कुल स्कोर के साथ जीत हासिल करके शान से फाइनल में जगह बनाई। पीएसजी दूसरी बार यूरोप के इस टॉप क्लब टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचा है। वह पांच साल पहले उपविजेता रहा था। उसने सुपरस्टार किलियन एमबाप्पे के रियाल मैड्रिड से जुड़ने के बाद पहले सत्र में ही ये कारनामा किया। पीएसजी के कोच लुई एनरिक ने कहा कि, मैंने पहले दिन से कहा था कि हमारा लक्ष्य इतिहास बनाने की स्थिति में आने के लिए पर्याप्त मेहनत करना है। यही हमारा लक्ष्य है। फ्रांस का ये क्लब 31 मई को म्यूनिख में होने वाले फाइनल में इंटर मिलान से भिड़कर अपने पहले चैंपियंस लीग खिताब के लिए फिर से प्रयास करेगा। तीन बार के यूरोपीय चैंपियन इंटर मिलान ने प्रतियोगिता के इतिहास के सबसे रोमांचक सेमीफाइनल में से एक में बार्सिलोना को 7-6 के कुल स्कोर से हराया। आर्सेनल के खिलाफ पीएसजी की तरफ से फैबियन रुइज ने 27वें मिनट में पहला गोल किया। अचरफ हकीमी ने 72वें मिनट में स्कोर 2-0 कर दिया। इसके चार मिनट बाद बुकायो साका ने आर्सेनल की तरफ से एकमात्र गोल किया।

देश युद्ध लड़ रहा.. क्रिकेट का चलना अच्छा नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान विवाद के कारण आईपीएल 2025 के मौजूदा सीजन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया है। 9 ई को बीसीसीआई की बैठक में ये बड़ा कदम उठाया गया। वहीं बीसीसीआई की तरफ से कहा गया कि जब देश युद्ध लड़ रहा हो तब क्रिकेट का चलना अच्छा नहीं लगता।

वहीं आज से कोई मैच नहीं होगा। वहीं अब बीसीसीआई की पहली प्राथमिकता विदेशी खिलाड़ियोंको वापस भेजने की है। इसके साथ ही बीसीसीआई नई तारीखों का जल्द ही घोषणा करेगा। दरअसल, 8 मई गुरुवार तक आईपीएल 2025 के 58 मुकाबले हुए थे, जिसमें पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स का मैच भी शामिल है। भारत-पाकिस्तान तनाव के कारण 8 मई को धर्मशाला में आयोजित ये मुकाबला बीच में ही रद्द कर दिया गया था। वहीं धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम को खाली करा दिया गया। खिलाड़ियों केधर्मशाला से दिल्ली लाने के लिए एक विशेष ट्रेन चलाई गई। आईपीएल के इस कारण को यही रोक दिया गया है। अब हालात सामान्य होने के बाद ही दुनिया की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग के बाकी मैचों को कराया जाएगा। इसकी तारीखों की घोषणा जल्द होगी। एक विकल्प ये भी हो सकता है कि खाली स्टेडियम में मुकाबले कराए जाएं, दर्शकों के स्टेडियम तक आने पर पाबंदी लगा दिया जाए।

वहीं पड़ोसी शहरों जम्मू और पठानकोट में हवाई हमले की चेतावनी के बाद गुरुवार को धर्मशाला में पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच मैच रद्द कर दिया गया था। इसके बाद से ही सीजन के भविष्य पर अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे थे। बीसीसीआई के एक अधिकारी ने पीटीआई से कहा कि, ये अच्छा नहीं लगता कि जब देश में युद्ध चल रहा हो तब क्रिकेट चल रहा हो।

सुरक्षा कारणों के चलते धर्मशाला से स्पेशल ट्रेन से वापस आएंगे खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का 58वां मैच पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच खेला जा रहा था जिसे रद्द कर दिया गया। बीसीसीआई भी दबाव में आ गया है। भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के बीच धर्मशाला मैदान में कम्पलीट ब्लैकआउट होने के बाद मुकाबला रद्द घोषित कर दिया गया और जल्द से जल्द मैदान को खाली करवाया गया था। अब बीसीसीआई के वाइस प्रेसिडेंट राजीव शुक्ला ने बड़ा बयान दिया है कि बोर्ड खिलाड़ियों को धर्मशाला से बाहर होने के लिए स्पेशल ट्रेन का इंतजाम कर रही है।

बीसीसीआई के वाइस प्रेसिडेंट ने कहा है कि, हम सभी खिलाड़ियों को सुरक्षित वापस लोने के लिए एक स्पेशल ट्रेन की व्यवस्था कर रहे हैं, अभी के लिए पंजाब किंग्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स मैच को रद्द घोषित कर दिया गया है। कल के हालातों को देखते हुए आईपीएल 2025 टूर्नामेंट के भव्यि पर फैसला लिया जाएगा। फिलहाल, सभी खिलाड़ियों की सुरक्षा पहली प्राथमिकता है।

वहीं टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी पंजाब टीम ने दमदार शुरुआत की। प्रभसिमरन ने प्रियांश आर्य के साथ पहले विकेट के लिए 122 रनों की साझेदारी की। प्रियांश की पारी का अंत टी नटराजन ने किया। उन्होंने 11वें ओवर की पहली गेंद पर माधव तिवारी को कैच थमाया। प्रियांश के बल्ले से पांच चौके और 6 छक्के निकले। प्रभसिमरन ने अपनी पारी में चौके मारे।

गुजरात टाइटंस के खिलाड़ियों के साथ कैसा है आशीष नेहरा का रिश्ता?

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के बाएं हाथ के स्पिनर साई किशोर ने टीम की सफलता का श्रेय मुख्य कोच आशीष नेहरा को देते हुए कहा कि वह खिलाड़ियों से सीधे और स्पष्ट तरीके से अपने विचार शेयर करते हैं। आईपीएल की तालिका में टॉप पर काबिज गुजरात टाइटंस के 11 मैचों में आठ जीत के साथ 16 अंक है और टीम प्लेऑफ में जगह पक्की करने के काफी करीब है।

साई किशोर ने स्टार स्पोर्ट्स के प्रेस रूम कार्यक्रम में चुनिंदा मीडिया से कहा कि, आशू पाजी अपने विचारों को लेकर काफी स्पष्ट रहते हैं। वह खिलाड़ियों से बिना किसी लाग-लपेटे के संवाद करते है। वह अच्छा प्रदर्शन करने पर सबसे पहले तारीफ करने वालों में होते हैं, इसके साथ ही अगर आप टीम की योजना से भटकते है तो वह बता देंते हैं कि उन्होंने ऐसी उम्मीद नहीं की थी। ऐसे में हर खिलाड़ी टीम के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार रहता है। किशोर को मौजूदा सत्र में टीम के हर मैच में खेलना का मौका मिला है और तमिलनाडु के इस गेंदबाज ने अब तक 14 विकेट लेकर टाइटंस की सफलता में अहम योगदान किया है। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान और बाएं हाथ के दिग्गज स्पिनर रहे डेनियल विटोरी भी किशोर की गेंदबाजी से प्रभावित है। सनराइजर्स हैदराबाद के मुख्य कोच ने कहा था कि किशोर के पास सीमित ओवर के क्रिकेट में सफल होने की काबिलियत है।

विटोरी से मिली तारीफ से जुड़े भाषा के सवाल पर साई किशोर ने कहा कि, ये काफी हौसला बढ़ाने वाली बात है। विटोरी ऐसे गेंदबाज रहे हैं जिनसे मैंने बचपन से प्रेरण ली है। उन्हें स्पिन गेंदबाजी में महारथ हासिल थी। इस 28 साल के गेंदबाज ने कहा कि, जब हमने उनके खिलाफ खेला था तब भी मुझे उनसे बात करने का मौका मिला था और ऐसे बातचीत से काफी मदद मिलती है। किशोर ने इंडियन प्रीमियर लीग में अपनी सफलता का श्रेय चेन्नई सुपर किंग्स और उसके करिश्माई कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को भी दिया।

भारत-पाकिस्तान सैन्य संघर्ष के कारण आईपीएल अनिश्चित काल के लिए स्थगित

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल के 2025 संस्करण को तत्काल प्रभाव से स्थगित कर दिया गया है। बीसीसीआई अधिकारी ने पुष्टि की कि बोर्ड भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते सीमा पार तनाव के बीच देश के साथ खड़ा होना चाहता है और फिलहाल टूर्नामेंट को स्थगित कर दिया गया है। अगर बाद में कोई विंडो उपलब्ध होती है, तो बीसीसीआई आईपीएल के 18वें संस्करण के शेष 16 मैचों को आयोजित करने की योजना बना सकता है, लेकिन फिलहाल टूर्नामेंट स्थगित है।

बीसीसीआई के सूत्रों ने अखबार को बताया, हमने आईपीएल को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने का फैसला किया है। खिलाड़ियों की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसलिए हमने टूर्नामेंट को फिलहाल रोकने का फैसला किया है। हम बाद में तय करेंगे कि टूर्नामेंट कब और कैसे शुरू हो सकता है। अभी, राष्ट्रीय हित सबसे महत्वपूर्ण है। धर्मशाला में मैच, जो बारिश के कारण निर्धारित समय से देरी से शुरू हुआ था, अचानक रोक दिया गया जब स्टेडियम में फ्लडलाइट्स बंद हो गईं। शुरू में माना गया कि यह तकनीकी गड़बड़ी थी, लेकिन जब खिलाड़ियों और अधिकारियों को हवाई हमले की चेतावनी से उत्पन्न सुरक्षा जोखिमों के बारे में बताया गया तो स्थिति तेजी से बिगड़ गई।

एक खिलाड़ी ने इंडियन एक्सप्रेस को यह भी बताया कि दोनों टीमों में घबराहट थी और विदेशी खिलाड़ी विशेष रूप से अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित थे। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया ने पहले बताया था कि उनके खिलाड़ियों ने भी अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की थी और वे घर लौटने के लिए तैयार थे।

आईपीएल पर पाकिस्तानी एंकर को साथी ने सुनाई खरीखोटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद पाकिस्तान की तरफ से भारतीय शहरों को ड्रोन से निशाना बनाने की नाकाम कोशिशों से दोनों देशों में तनाव बढ़ गया है। इस बीच पाकिस्तान की एक न्यूज एंकर ने आईपीएल को लेकर ऑन एयर ही अपनी नफरत दिखा दी है। इस दौरान उसको कहा हुआ सुना जा सकता है कि जब तक आईपीएल भारत से बाहर नहीं शिफ्ट होता उसे सुकून नहीं मिलेगा। हालांकि, उसके नफरती बयान पर शो पर आए गेस्ट ने उसे तुरंत खरीखोटी सुना दी। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव और युद्ध जैसी स्थिति का असर आईपीएल और पीएसएल पर भी पड़ा है। पीएसएल सस्पेंड हो चुकी है। उसका बाकी का हिस्सा अब दुबई में होगा। मैचों के शेड्यूल अभी तय नहीं हुए हैं।

इसी तरह बीसीसीआई ने भी शुक्रवार को आईपीएल को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने का फैसला किया है। इससे पहले गुरुवार को धर्मशाला में खेला जा रहा मैच रद्द कर दिया गया था। पीएसएल हो या आईपीएल तनाव और ब्लैकआउट के बीच खिलाड़ियों और दर्शकों की सुरक्षा के लिहाज से ऐसे फैसले स्वाभाविक भी हैं। इसमें विदेशी खिलाड़ी भी हैं जो सुरक्षा को लेकर चिंतित होंगे लेकिन पाकिस्तानी न्यूज चैनल की एंकर को तो सुकून चाहिए वो भी जब आईपीएल भारत से शिफ्ट हो जाए।

बता दें कि, समा टीवी की इस एंकर ने कहा कि, आईपीएल दुबई जा रहा है क्या? नहीं न। आपका पीएसएल शिफ्ट हो रहा है। आपका टी20 वर्ल्ड कप किसने आपको फाइनेंशियल लॉस किया? भारत ने। किसने आपकी क्रिकेट रुकवाई, 10 साल तक, 15 साल तक? भारत ने। कौन आपके क्रिकेट को तबाह और बर्बाद कर दिया? भारत ने। जब तक आईपीएल भारत की सरजमीं से निकलता नहीं है, कम से कम हमें सुकून नहीं आएगा। इस पर उन्हीं के कार्यक्रम में आए एक गेस्ट ने कहा कि, आपके सुकून के लिए हम जंग नहीं लड़ सकते।

कलेक्टर प्रतिभा पाल ने राजस्व कार्यों की समीक्षा के दौरान दिये निर्देश

सीमांकन व नामांतरण के एक साल से अधिक समय से लंबित प्रकरण 31 मई तक करें निराकृत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने राजस्व कार्यों की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि लोक सेवा गारंटी योजना में तय समय सीमा में राजस्व प्रकरणों का निराकरण करें। समय सीमा का पालन न करने वाले अधिकारियों पर जुर्माने की कार्यवाही की जाएगी। सीमांकन और नामांतरण के एक साल से अधिक समय से लंबित सभी प्रकरण 31 मई तक अनिवार्य रूप से निराकृत करें। नामांतरण और बंटवारा के प्रकरणों में तीन माह की समय सीमा का पालन न करने पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। भूमि आवंटन से जुड़े प्रकरणों का एक माह में अनिवार्य रूप से निराकरण करें। बैठक में नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन, अभिलेखों में सुधार, नक्शा तरमीम तथा सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की गई।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि किसानों की फार्मर आईडी बनाने के लिए पुनः अभियान चलाएं। इसके लिए सर्वेयर और पटवारियों की ड्यूटी लगाकर प्रतिदिन कम से कम एक हजार फार्मर आईडी बनवाएं। स्वामित्व योजना में अभी भी 90 गांवों में कार्य शेष है। जिन गांवों में सर्वे और सत्यापन का कार्य पूरा हो गया है वहाँ पट्टे जारी करने की कार्यवाही करें। स्वामित्व योजना और धारणाधिकार योजना के लंबित प्रकरण तीन दिवस में अनिवार्य रूप से निराकृत करें। सभी एसडीएम और तहसीलदार रिकार्ड रूम में डाटा संधारण के लिए पूरी तैयारी कर लें। सभी उपलब्ध और आवश्यक रिकार्डों को स्कैनिंग के लिए उपलब्ध कराएं। न्यायालय में अवमानना से संबंधित 48 प्रकरणों में से 23 अभी भी लंबित हैं। इनमें कार्यवाही करके तत्काल जवाबदावा और प्रतिवेदन न्यायालय में प्रस्तुत करें। प्राकृतिक आपदा के प्रकरणों का सात दिवस में निराकरण करके पीड़ित को राहत राशि उपलब्ध कराएं।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि जल जीवन मिशन की पाइपलालाइन और टंकियों के निर्माण के लिए चिन्हित स्थानों की भूमि निर्माण एजेंसी को तत्काल उपलब्ध कराएं। सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की स्थिति में सुधार करें। इसमें लंबित सीमांकन के सभी प्रकरणों का एक माह में सीमांकन कराकर निराकरण करें। सीएम हेल्पलाइन में 50 दिन से अधिक समय से लंबित सभी आवेदनों का निराकरण सुनिश्चित करें। प्रकरणों का संतुष्टिपूर्वक निराकरण कराकर जिले को ए श्रेणी में पहुंचाएं। नरवाई जलाने में प्रतिबंध लगा हुआ है। इसका उल्लंघन करने वाले किसानों पर वैधानिक कार्यवाही करते हुए जुर्माना लगाएं। एसडीएम और तहसीलदार अपने क्षेत्र में पेयजल व्यवस्था की भी सतत निगरानी करें। हैण्डपंपों और नलजल योजनाओं से संबंधित शिकायतों को तत्काल निराकृत कराकर आमजनता को पेयजल की व्यवस्था कराएं। उचित मूल्य दुकानों का नियमित रूप से निरीक्षण करें। खाद्य सुरक्षा योजना के हितग्राहियों की शत-प्रतिशत ई केवाईसी कराकर स्थाई रूप से पलायन करने वाले तथा मृतक व्यक्तियों के नाम पोर्टल से पृथक कराएं। राजस्व प्रकरणों के संबंध में समय पर प्रतिवेदन न देने वाले तहसीलदारों तथा पटवारियों पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। अपर कलेक्टर लापरवाह रीडरों पर भी कड़ी कार्यवाही करें। बैठक में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले, सभी एसडीएम, तहसीलदार तथा नायब तहसीलदार उपस्थित रहे।

बदमाश की गोली से घायल हेड कॉन्स्टेबल ने दम तोड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सतना में बदमाश के गोली मारने से घायल हेड कॉन्स्टेबल प्रिंस गर्ग? ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। शुक्रवार सुबह 8 बजे दिल्ली के मैक्स अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके कॉलर बोन में इन्फेक्शन बढ़ता जा रहा था। प्रिंस को गोली मारने वाला आदर्श शर्मा शॉर्ट एनकाउंटर के बाद गिरफ्तार किया जा चुका है। अब उस पर हत्या का केस चलेगा।

28-29 अप्रैल की दरमियानी रात करीब 12 बजे सतना के जैतवारा थाना परिसर में नकाब पहने आदर्श शर्मा ने प्रिंस को गोली मारी थी। गोली प्रिंस के कंधे के पास लगी थी। आदर्श मौके से फरार हो गया था।हेड कॉन्स्टेबल प्रिंस गर्ग थाना परिसर में बने बैरक में रहता था। रात को ड्यूटी से लौटकर खाना खाने की तैयारी कर रहा था। इसी दौरान कमरे के बाहर से आवाज आई। प्रिंस बाहर आया और देखा कि एक नकाबपोश युवक खड़ा है। प्रिंस के बाहर आते ही युवक ने कट्टे से उस पर फायर कर दिया। प्रिंस को पहले संजय गांधी अस्पताल, रीवा फिर निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। 7 मई को सेहत बिगड़ने पर रात 1.20 बजे पीएम श्री एयर एंबुलेंस से उन्हें दिल्ली एयर लिफ्ट किया गया था।

प्रिंस के परिजन ने भाजपा के जिला अध्यक्ष भगवती पांडे से मदद मांगी थी। पांडे ने मुख्यमंत्री मोहन यादव से इस विषय में चर्चा की। इसके बाद एयर एंबुलेंस की व्यवस्था हुई। प्रिंस गर्ग को दिल्ली के साकेत स्थित मैक्स अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

प्रिंस के छोटे भाई प्रशांत तिवारी ने कहा- सीटी स्कैन में शरीर के अंदर गोली नहीं मिली थी। चिकित्सा मंत्री से लेकर आईजी, कलेक्टर, एसपी सभी लोग उनकी हालत पर नजर बनाए थे। बावजूद इसके यह नहीं पता कर पाए कि उनकी कॉलर बोन में इन्फेक्शन बढ़ता जा रहा है। जब हालत गंभीर हुई तो 7 मई की देर रात उन्हें रीवा से दिल्ली एयर लिफ्ट किया गया।

पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि प्रिंस पर हमला करने वाला आदर्श बाइक चोरी के मामले में पूछताछ के लिए थाने बुलाए जाने से नाराज था।

इस बीच आरोपी आदर्श शर्मा का छह माह पुराना एक वीडियो भी सामने आया। जिसमें वह पेट्रोल पंप पर जलती सिगरेट के साथ पंप के नोजल से पेट्रोल बहाता दिख रहा है। घटना के दौरान पेट्रोल पंप कर्मचारी डर के कारण दूर खड़े थे।

ग्रामीणों का कहना है कि आदर्श की हरकतों से परेशान होकर परिवार ने उसे घर से निकाल दिया था। परिजन उसके डर से घर पर ताला लगा कर रखते हैं। दादी ने भी डर से घर छोड़ दिया है।

अस्पताल की जगह अपने खाते में भेजे ढाई लाख

बीमा के रुपयों में कर्मचारी ने किया हेरफेर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के अहमिया था क्षेत्र के चिरायु अस्पताल में लाखों की धोखाधड़ी करने वाले बदमाश को गिरफ्तार किया है। उसने अस्पताल के खाते में आने वाले बीमा के रुपयों को खुद के खाते में ट्रांसफर करा लिए थे। शुक्रवार को उसे जेल भेज दिया गया है।

पुलिस के मुताबिक आरोपी ऋषभ देव पांडेय स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के बिल बनाता था। इसके साथ ही बीमा कंपनियों से बिल की बकाया राशि की वसूली का काम करता था।

चिरायु हॉस्पिटल के संचालक डॉ. श्रीवास्तव ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि उन्होंने वर्ष 2010 में सिरमौर चौराहा, रीवा में चिरायु हॉस्पिटल की स्थापना की थी। वर्ष 2021 में उन्होंने ऋषभदेव पाण्डेय को लिपिकीय कार्यों के लिए नियुक्त किया।

ऋषभदेव का कार्य स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के बिल बनाना और उनसे बकाया राशि की वसूली करना था, जिसे हॉस्पिटल के बैंक ऑफ बड़ौदा खाते में जमा करना था।

थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल ने बताया कि शुरुआत में ऋषभदेव ने निर्धारित खाते में राशि जमा की। लेकिन बाद में उसने धोखाधड़ी करते हुए बीमा कंपनियों को अपना भारतीय स्टेट बैंक, सिटी शाखा, रीवा का खाता नंबर प्रदान किया और चिरायु हॉस्पिटल के विभिन्न बिलों की राशि, लगभग ढाई लाख रुपए,अपने खाते में जमा करा ली।

मामले को संज्ञान में लेते हुए अमहिया थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल ने बड़ी कार्यवाही कर आरोपी ऋषभदेव पांडे को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

बारातियों से भरी तेज रफ्तार बालेरो पलटी, सात घायल गंभीर स्थिति में SGMH रेफर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मैहर में शुक्रवार सुबह बारातियों से भरी बोलेरो अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में कार सवार सात बाराती घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही मैहर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को 108 एंबुलेंस से सिविल अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद सभी गंभीर घायलों को रीवा के संजय गांधी मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। घटना नेशनल हाईवे-30 के अमरा नाला के पास की है।

जानकारी के अनुसार रीवा जिले के ग्राम लाहोली से पाठक परिवार की बारात मैहर के अमदरा गांव में गई थी। विवाह समारोह के बाद शुक्रवार सुबह बाराती वापस लौट रहे थे। तभी अमरानाला के पास बोलेरो कार (एमपी 17 सीसी 0399) तेज रफ्तार के कारण अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराकर दो से तीन बार पलट गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक दुर्घटना के समय कार की गति बहुत तेज थी। चालक को झपकी आने की आशंका जताई जा रही है। हादसे में बोलेरो चालक चन्द्र प्रताप सिंह (56), दिव्यांशी पांडे (10), रुचि पांडे (23), शरद द्विवेदी (19), अभिषेक पांडे (20), प्रीति शर्मा (26) और ज्योति द्विवेदी (28) घायल हुए। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है।

बाईक सवार दंपत्ति को हाईवा ने मारा टक्कर, पत्नी की मौत

मैहर से देवी दर्शन कर लौट रहे बाइक सवार दंपति रीवा में सड़क हादसे का शिकार हो गए। [ड्डस्त्र] इस हादसे में पत्नी की मौत हो गई जबकि पति को भी गंभीर चोट आई है। घटना के बाद परिजनों ने प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल उठाये हैं। मृतिका ममता द्विवेदी उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के ग्राम सजी की रहने वाली थी। ममता अपने पति ओमकार द्विवेदी के साथ बाइक से मैहर देवी दर्शन करने गई थी। जहां से वापस लौटते समय रीवा के चोरहटा बाईपास में तेज़ रफ्तार डंपर के चालक ने बाइक को टक्कर मार दी। जिससे ममता की साड़ी डंपर में फंस गई और वो गिर गईं। सड़क हादसे के बाद गंभीर रूप से घायल ममता की मदद के लिए उनके पति द्वारा डायल 100 पुलिस सहित 108 एंबुलेंस और थाने को सूचना देने का प्रयास किया गया लेकिन कहीं भी फोन नहीं लगा। इसके बाद ओमकार गंभीर रूप से घायल पत्नी को एक ऑटो में लेकर स्वस्था अस्पताल पहुंचे। जहां उन्हें न तो स्ट्रेचर मिला और न ही कोई वार्ड बॉय। किसी तरह पत्नी को लेकर चिकित्सकों तक पहुंचे। जहां जांच के उपरांत डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना के बाद डंपर सहित चालक मौके से फरार हो गया। मृतिका के परिजनों का आरोप है कि प्रशासन की लचर व्यवस्था के चलते ममता की मौत हुई है।

रीवा में गला रेतकर हत्या करने वाला जल्लाद दोस्त गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में अपने ही दोस्त का गला रेतकर हत्या करने वाले क्रूर दोस्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के साथ-साथ उसके एक साथी को भी गिरफ्तार किया है। जिसने इस पूरे हत्याकांड का वीडियो मोबाइल कैमरे में कैद किया था। हत्या की वजह आरोपी और मृतक के बीच गौवंश की तस्करी को लेकर हुआ विवाद बताया जा रहा है। फिलहाल पुलिस पकड़े गए इन दोनों आरोपियों से हत्या की सही वजह जानने सहित वारदात में प्रयुक्त हथियार को बरामद करने का प्रयास कर रही है। बतादें कि 7 मई को रीवा जिले के गढ़ थाना क्षेत्र स्थित भौकरी के जंगल में पिप राहा गांव निवासी अभिषेक त्रिपाठी नामक युवक की बड़ी ही बेरहमी से गला रेतकर हत्या कर दी गई थी। इस हत्याकांड में खास बात ये थी कि आरोपियों ने गला रेतने का वीडियो बनाकर मृतक के परिजनों को भेज दिया था।

इस हत्याकांड के वीडियो ने वायरल होते ही परिजन और ग्रामीण सहित पुलिस मह कमे में हड़कंप मचा दिया था। पुलिस ने वीडियो वायरल होने के बाद भौंखरी के जंगल में पहुंचकर मृतक के शव को बरामद किया। जबकि आरोपी फरार हो गए थे। मामले में फिलहाल पुलिस ने हर्ष हत्याकांड में शामिल मुख्य आरोपी रजनीश उर्फ भोले सहित उसके साथी राजकुमार केवट उर्फ बुक्का निवासी ग्राम कररिया थाना सिरमौर को गिरफ्तार कर लिया है।

पशुपालन एवं डेयरी विभाग मंत्री पटेल आज आएंगे रीवा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पशुपालन एवं डेयरी विकास राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार तथा मऊगंज जिले के प्रभारी मंत्री लखन पटेल दमोह से कार द्वारा प्रस्थान कर 10 मई को सुबह 11 बजे रीवा सर्किट हाउस पहुंचेंगे तथा सुबह 11.15 बजे कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक मऊगंज के साथ सर्किट हाउस रीवा में मऊगंज जिले की समीक्षा बैठक करेंगे। पटेल दोपहर 12.30 बजे एक स्वास्थ्य एक भविष्य कार्यक्रम की संभाग स्तरीय कार्यशाला में होटल विजय विलास में भाग लेंगे। तदुपरांत दोपहर बाद 3 बजे रीवा एयरपोर्ट से विमान द्वारा भोपाल रवाना हो जाएंगे।

बरहौं संस्कार से लौट रहे पिकअप में सवार दो दर्जन से ज्यादा लोग सड़क हादसे का शिकार

रीवा में बरहौं संस्कार से लौट रहे पिकअप में सवार दो दर्जन से ज्यादा लोग सड़क हादसे का शिकार हो गए। तेज़ रफ्तार वाहन डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गया। हादसे में घायल चार लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है, जिन्हें रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक पिकअप में करीब 35 से 40 लोग सवार थे। सभी लोग ग्राम पाँती से कंचनपुर बरहौं कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। जहां से शुक्रवार सुबह करीब 5 बजे वापस आ रहे थे। जैसे ही चोरहटा के समीप पहुंचे तभी पिकअप अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराकर पलट गया। घटना के बाद मौके पर चीख पुकार मच गई। तत्काल स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया और मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

रीवा एवं शहडोल संभाग में एमपीआरडीसी के कार्यों की प्रगति की उप मुख्यमंत्री ने समीक्षा की

निर्माण कार्यों की नियमित समीक्षा करें, समय सीमा में पूर्ण करें कार्य

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में रीवा एवं शहडोल संभाग में एमपीआरडीसी के विभिन्न निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं। उन्होंने कहा कि प्रगतिरत कार्यों की नियमित समीक्षा अनिवार्य है, ताकि किसी प्रकार की बाधा समय रहते दूर की जा सके। साथ ही, पूर्ण हो चुके कार्यों का समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जाए, जिससे कार्यों की गति बनी रहे और बजट का प्रभावी उपयोग संभव हो सके।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने सीधी-सिंगरौली फोरलेन मार्ग के शेष भाग का कार्य शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह मार्ग क्षेत्र के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, अतः प्रशासनिक अड़चनों को सर्वोच्च प्राथमिकता से दूर किया जाए। यह उल्लेखनीय है कि इस परियोजना का 52 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि शेष कार्य प्रक्रियाधीन है। इसके साथ ही, उन्होंने एडीबी (एशियन डेवलपमेंट बैंक) द्वारा वित्तपोषित रीवा-बेड़ा-सेमरिया मार्ग के शेष लगभग एक किमी मार्ग (ढेकहा तिराहा से मंडी तक) को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह मार्ग अत्यधिक व्यस्त रहता है, इसके शीघ्र निर्माण से स्थानीय नागरिकों को बड़ी राहत मिलेगी।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने उमरिया से शहडोल तक 2-लेन मार्ग के उन्नयन कार्य की समीक्षा की। बताया गया कि यह कार्य 93 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुका है और शेष कार्य प्रगतिरत है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कार्य जून माह के अंत तक हर हाल में पूर्ण कर लिया जाए। रीवा बायपास फोरलेन मार्ग परियोजना का 14 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है। इसमें 4 मध्यम पुलों में से 2, 39 बॉक्स कल्वर्ट में से 14 तथा आवश्यक 5 वीयूपी (वर्टिकल अंडर पास) में से 2 का कार्य प्रगतिरत है। उप मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि कार्यों की सतत निगरानी की जाए और तय समयसीमा में गुणवत्ता के साथ कार्यों को पूरा किया जाए। बैठक में एमडी एमपीआरडीसी भरत यादव सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

रीवा में धू-धूकर जला ट्रांसफार्मर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के बैकुंठपुर नगर परिषद में उस वक्त हड़कंप मच गया। जब ट्रांसफार्मर धू-धूकर जल उठा। ये घटना शुक्रवार सुबह बैकुंठपुर में हॉस्पिटल तिराहे पर हुई। स्थानीय लोगों की सूचना पर विद्युत सप्लाई को बंद किया गया। जिसके बाद लोगों ने आग पर काबू पाया। प्रत्येक दर्शियों की मानें तो ट्रांसफार्मर में लगी ये आग कचरे के ढेर के कारण भड़की थी। बताया गया कि शॉर्ट सर्किट की वजह से निकली चिंगारी कचरे के ढेर में गिरी, जिससे आग भड़क उठी और देखते ही देखते ट्रांसफार्मर जलकर खाक हो गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि नगर परिषद में दो फायर ब्रिगेड होने के बाद भी सूचना पर फायर ब्रिगेड मौके पर नहीं पहुंचा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।